मत्ती

रचित

सुसमाचार

दाम एक पैसा।

मत्ती रचित सुसमाचार।

१ इब्राहीम के सन्तान दाऊद के सन्तान यीशु मसीह की बंशावली।

२ इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ इसहाक से याकूब और याकूब से यहूदा और उस के भाई, ३ यहूदा और तामार से फिरिस और जोरह और फिरिस से हिस्रोन और हिस्रोन से राम, ४ और राम से अम्मीनादाब और अम्मीनादाब से नहशोन और नहशोन से सलमोन, ५ और सलमोन और राहब से बोअज और बोअज और रूत से ओबेद और ओबेद से यिशै, ६ और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ॥

७ और दाऊद और उरिय्याह की विधवा से सुलैमान उत्पन्न हुआ, ८ और सुलैमान से रहबाम और रहबाम से अबिय्याह और अबिय्याह से आसा, और आसा से यहोशाफात और यहोशाफात से योराम और योराम से उज्जिय्याह, ९ और उज्जिय्याह से योताम और योताम से आहाज और आहाज से हिजकिय्याह, १० और हिजकिय्याह से मनश्शिह और मनश्शिह से आमोन और आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ। ११ और बाबिल को पहुँचाये जाने के समय में योशिय्याह से यकुन्याह और उस के भाई उत्पन्न हुए॥

१२ बाबिल को पहुँचाये जाने के पीछे यकुन्याह से शालतिएल और शालतिएल से जरुब्बाबिल, १३ और जरुब्बाबिल से अबीहूद और अबीहूद से इल्याकीम और इल्याकीम से अजोर, १४ और अजोर से सदोक और सदोक से अखीम और अखीम से इलीहूद, १५ और इलीहूद से इलियाजार और इलियाजार से मत्तान और मत्तान से याकूब, १६ और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ जो मरयम का पति था जिस से यीशु जो मसीह कहलाता है उत्पन्न हुआ॥

१७ इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी और दाऊद से बाबिल को पहुँचाए जाने तक चौदह पीढ़ी और बाबिल को पहुँचाये जाने के समय से मसीह तक चौदह पीढ़ी ठहरीं॥

१८ यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ। जब उस की माता मरयम की मंगनी यूसुफ से हुई तो उन के इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। १९ सो उस के पति यूसुफ ने जो धर्मी था उस को बदनाम करना न चाहकर उसे चुपके से त्यागने की मनसा की। २० जब वह इन बातों के सोचही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा हे यूसुफ दाऊद के सन्तान तू अपनी पत्नी मरयम को अपने यहां लाने से मत डर क्योंकि जो उस के गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। २१ वह पुत्र जनेगी और तू उस का

नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उन के पापों से छुड़ाएगा। २२ यह सब कुछ इस लिये हुआ कि जो बचन प्रभु ने नबी के द्वारा कहा था वह पूरा हो कि, २३ देखो कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उस का नाम इम्मानुएल रक्खा जायगा जिस का अर्थ यह है परमेश्वर हमारे साथ। २४ यूसुफ जाग उठकर प्रभु के दूत के कहे अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया। २५ और उस के पास न गया जब तक कि वह पुत्र न जनी और उस ने उस का नाम यीशु रक्खा॥

२. हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ तो देखो पूरब से कितने ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे कि, २ यहूदियों का राजा जिस का जन्म हुआ कहां है क्योंकि हम ने पूरब में उस का तारा देखा और उस को प्रणाम करने आये हैं। ३ यह सुन कर हेरोदेस राजा और उस के साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। ४ और उस ने लोगों के सब महायाजकों और शास्त्रियों को इकट्ठे कर उन से पूछा मसीह का जन्म कहां होगा। ५ उन्हों ने उस से कहा यहूदिया के बैतलहम में क्योंकि नबी के द्वारा यों लिखा गया है कि, ६ हे बैतलहम जो यहूदा के देश में है तू किसी रीति से यहूदा के हाकिमों में सब से छोटा नहीं क्योंकि तुझ में से एक हाकिम निकलेगा जो मेरे लोग इस्राएल की रखवाली करेगा।

७ तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उन से पूछा कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया। ८ और उस ने यह कह कर उन्हें बैतलहम भेजा कि जाकर उस बालक के विषय में ठीक ठीक बूझो और जब उसे पाओ तो मुझे समाचार दो कि मैं भी जाकर उस को प्रणाम करूं। ९ वे राजा की सुनकर चले गए। और देखो जो तारा उन्होंने पूरब में देखा था वह उन के आगे आगे चला और जहां बालक था उस जगह के ऊपर पहुँच कर ठहर गया। १० उन्हों ने उस तारे को देखकर बहुत ही बड़ा आनन्द किया। ११ और घर में जाकर उस बालक को उस की माता मरयम के साथ देखा और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया और अपना अपना थैला खोल कर उस को सोना और लोबान और गन्धरस की भेंट चढ़ाई। १२ और स्वप्न में यह चितौनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गये॥

१३ उन के चले जाने के पीछे देखो प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा उठ उस बालक को और उस की माता को लेकर मिसर देश को भाग जा और जब तक मैं तुझ से न कहूं तब तक वहीं रहना क्योंकि हेरो-देस इस बालक को ढूँढ़ने पर है कि उसे मरवा डाले। १४ वह रात ही उठकर बालक और उस की माता को लेकर मिसर को चल दिया। १५ और हेरोदेस के मरने तक वहीं

रहा इस लिये कि वह बचन जो प्रभु ने नबी के द्वारा कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिसर से बुलाया पूरा हो । १६ हेरोदेस यह देखकर कि ज्योतिषियों ने मुझ से हंसी की है क्रोध से भर गया और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक ठीक पूछे हुए समय के अनुसार बैतलहम और उस के आस पास के सारे लड़कों को जो दो बरस के या उस से छोटे थे मरवा डाला । १७ तब जो बचन यिरमयाह नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ कि, १८ रामा में एक शब्द सुनाई दिया रोना और बड़ा विलाप राहेल अपने बालकों के लिये रो रही था और शान्त होना न चाहती थी क्योंकि वे मिलते नहीं ॥

१६ हेरोदेस के मरे पीछे देखो प्रभु के दूत ने मिसर में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई देकर कहा कि, २० उठ बालक और उस की माता को लेकर इस्राईल के देश में चला जा क्योंकि जो बालक का प्राण लेना चाहते थे वे मर गए । २१ वह उठ बालक और उस की माता को साथ लेकर इस्राईल के देश में आया । २२ पर यह सुनकर कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस की जगह यहूदिया पर राज्य करता है वहां जाने से डरा और स्वप्न में चितौनी पाकर गलील देश में गया । २३ और नासरत नाम नगर में जा बसा कि वह बचन पूरा हो जो नबियों के द्वारा कहा गया था कि वह नासरी कहलाएगा ॥

३. उन दिनों में यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा कि, २ मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है। ३ यह वही है जिस की चरचा यशायाह नबी के द्वारा की गई कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो उस की सड़कें सीधी करो ४ यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने था और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे हुए था और उस का आहार टिड्डियां और बनमधु था। ५ तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग उस के पास निकल आने, ६ और अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लेने लगे। ७ जब उस ने बहुतेरे फरीसियों और सदूकियों को बपतिसमा के लिये अपने पास आते देखा तो उन से कहा हे सांप के बच्चो किस ने तुम्हें जता दिया कि आनेवाले क्रोध से भागो। ८ सो मन फिराव के योग्य फल लाओ। ९ और अपने मन में न सोचो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। १० और अब ही कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर धरा है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में फेंका जाता है। ११ मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिसमा देता हूं पर

जो मेरे पीछे आनेवाला है वह मुझ से शक्तिमान है मैं उस की जूती उठाने के लायक नही वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और आग से बपतिस्मा देगा। १२ उस का सूप उस के हाथ में है और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ़ करेगा और अपने गेहूं को खत्ते में इकट्ठा करेगा पर भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा।

१३ तब यीशु गलील मे युर्द्दन के किनारे पर यूहन्ना के पास उस से बपतिसमा लेने आया। १४ पर यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा कि मुझे तेरे हाथ मे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है और तू मेरे पास आया है। १५ यीशु ने उस को यह उत्तर दिया कि अब ऐसा ही होने दे क्योंकि हमें इसी रीति से सब धर्म को पूरा करना चाहिये तब उस ने उस की मान ली। १६ और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया और देखो उस के लिये आकाश खुल गया और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरने और अपने ऊपर आते देखा। १७ और यह आकाश बाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न हूं॥

४. तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया कि शैतान उस की परीक्षा करे। वह चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा अन्त में उसे भूख लगी। ३ तब परखनेवाले ने पास आकर कहा यदि तू पर-

मेश्वर का पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। ४ उस ने उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं पर हर एक बचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीता रहेगा। ५ तब शैतान ने उसे पवित्र नगर में ले जाकर मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। ६ और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को नीचे गिरा दे क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्ग-दूतों को आज्ञा देगा कि वे तुझे हाथों हाथ उठा लें न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे। ७ यीशु ने उस से कहा यह भी लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर। ८ फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उस का विभव दिखाकर, ९ उस से कहा कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दूंगा। १० तब यीशु ने उस से कहा हे शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर। ११ तब शैतान उस के पास से चला गया और देखो स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे॥

१२ फिर यह सुनकर कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया वह गलील को चला गया। १३ और नासरत को छोड़कर कफर-नहूम में जो झील के किनारे जबूलून और नपताली के देश में है आ बसा। १४ कि जो यशायाह नबी के द्वारा कहा

गया था वह पूरा हो। १५ कि जबूलून और नपताली के देश झील की ओर यरदन के पार अन्यजातियों का गलील। १६ जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्हों ने बड़ी ज्योति देखी और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे उन पर ज्योति उदय हुई॥

१७ उस समय से यीशु प्रचार करने और यह कहने लगा कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है। १८ उस ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाई अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है और उस के भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछवे थे। १९ और उन से कहा मेरे पीछे चले आओ और मैं तुम को मनुष्यों के मछवे बनाऊंगा। २० वे तुरन्त जालों को छोड़कर उस के पीछे हो लिये। २१ और वहां से आगे बढ़कर उस ने और दो भाई अर्थात् जबदी के पुत्र याकूब और उस के भाई यूहन्ना को अपने पिता जबदी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा और उन्हें भी बुलाया। २२ वे तुरन्त नाव को और अपने पिता को छोड़कर उस के पीछे हो लिये॥

२३ और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता और लोगों में हर बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। २४ और सारे सूरिया में उस का बड़ा नाम

हो गया और लोग सब बीमारों को जो नाना प्रकार की बीमारियों और पीड़ाओं से दुखी थे और जिन में दुष्टात्मा थे और मिर्गीहों और झोले के मारे हुओं को उस के पास लाये और उस ने उन्हें चंगा किया। २५ और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उस के पीछे हो ली॥

५. वह इस भीड़ को देख कर पहाड़ पर चढ़ गया और जब बैठा तो उस के चेले उस के पास आए। २ और वह अपना मुंह खोल कर उन्हें यह उपदेश देने लगा। ३ धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ४ धन्य हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शान्ति पाएंगे। ५ धन्य हैं वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। ६ धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और पियासे हैं क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। ७ धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर दया की जायगी। ८ धन्य हैं वे जिन के मन शुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। ९ धन्य हैं वे जो मेल करवैये हैं क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। १० धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ११ धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा करें और सताएं और झूठ बोलते हुए तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें। १२ आनन्द और मगन हो क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग

में बड़ा फल है इस लिये कि उन्हों ने उन नबियों को जो तुम से पहिले हुए थे इसी रीति से सताया था ॥

१३ तुम पृथिवी के नमक हो पर यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा वह फिर किसी काम का नहीं केवल यह कि बाहर फेंका और मनुष्यों से रौंदा जाए। १४ तुम जगत का उजाला हो। जो नगर पहाड़ पर बसा है वह छिप नहीं सकता। १५ फिर लोग दिया बार के पैमाने के नीचे नहीं पर दीवट पर रखते हैं और वह घर के सब लोगों को उजाला देता है। १६ वैसा ही तुम्हारा उजाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की बड़ाई करें ॥

१७ यह न समझो कि मैं व्यवस्था या नबियों के लेखों को लोप करने आया हूं। १८ लोप करने नहीं पर पूरा करने आया हूं क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक आकाश और पृथिवी टल न जाएं तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु बिना पूरे हुए न टलेगा। १९ इस लिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से एक को टाले और लोगों को ऐसाही सिखाए वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा पर जो कोई उन्हें माने और सिखाए वही स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहलाएगा। २० मैं तुम से कहता हूं यदि तुम शास्त्रियों और फरीसियों से बढ़कर धर्मी न हो

तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी जाने न पाओगे॥

२१ तुम ने सुना है कि अगलों को कहा गया था कि खून न करना और जो कोई खून करे वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। २२ पर मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करे वह कचहरी मे दण्ड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई से कहे अरे निकम्मा वह महा सभा में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई कहे अरे मूर्ख वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। २३ सो यदि तू अपनी भेंट बेदी पर लाए और वहां स्मरण करे कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर कुछ विरोध है तो अपनी भेंट वहां बेदी के सामने छोड़ कर चला जा। २४ पहले अपने भाई से मेल कर तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। २५ जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है झट मेल कर ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे और हाकिम तुझे पियादे को सौंपे और तू जेलखाने में डाला जाए। २६ मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा॥

२७ तुम ने सुना है कि कहा गया था कि व्यभिचार न करना। २८ पर मैं तुम से कहता हूं जो कोई बुरे मन से किसी स्त्री को देखे वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। २९ यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर फेंक दे क्योंकि तेरे लिये यह भला है

कि तेरा एक अंग नाश हो और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। ३० और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट कर फेंक दे क्योंकि तेरे लिये यह भला है कि तेरा एक अंग नाश हो और तेरा सारा शरीर नरक में न जाए।

३१ यह भी कहा गया था कि जो कोई अपनी पत्नी को त्यागे वह उसे त्याग पत्र दे। ३२ पर मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागे वह उससे व्यभिचार कराता है और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे वह व्यभिचार करता है॥

३३ फिर तुम ने सुना है कि अगलों से कहा गया था कि झूठी किरिया न खाना पर प्रभु के लिये अपनी किरियाओं को पूरी करना। ३४ पर मैं तुम से कहता हूं किरिया कभी न खाना न स्वर्ग की क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। ३५ न धरती की क्योंकि वह उस के पांवों की चौकी है न यरूशलेम की क्योंकि वह महाराजा का नगर है। ३६ अपने सिर की भी किरिया न खाना क्योंकि तू एक बाल को न उजला न काला कर सकता है। ३७ पर तुम्हारी बात हां की हां या नहीं की नहीं हो जो कुछ इस से अधिक हो वह बुराई से होता है॥

३८ तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत। ३९ पर मैं तुम

से कहता हूं कि बुरे का सामना न करना पर जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे। ४० जो तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे उसे दोहर भी लेने दे। ४१ जो कोई तुझे कोस भर बेगार ले जाए उस के साथ दो कोस चला जा। ४२ जो कोई तुझ से मांगे उसे दे और जो तुझ से करजा लेना चाहे उस से मुंह न मोड़॥

४३ तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने बैरी से बैर। ४४ पर मैं तुम से कहता हूं कि अपने बैरियों से प्रेम रखना और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करना। ४५ इस से तुम अपने स्वर्गीय पिता के सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर सूरज उदय करता है और धर्म्मियों और अधर्म्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। ४६ यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों ही से प्रेम रखो तो क्या फल पाओगे क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते॥

४७ और यदि तुम अपने भाइयों ही को नमस्कार करो तो कोनसा बड़ा काम करते हो क्या अन्यजाति भी ऐसा ही नहीं करते। ४८ सो जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है वैसे ही तुम भी सिद्ध हो जाओ॥

६. चौकस रहो कि तुम मनुष्यों के सामने दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ फल न पाओगे॥

२ इस लिये जब तू दान करे तो अपने आगे तुरही न फुंकवा जैसा कपटी सभाओं और गलियों में करते हैं कि लोग उन की बड़ाई करें मैं तुम से सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके । ३ पर जब तू दान करे तो जो तेरा दहिना हाथ करता है तेरा बांया हाथ न जानने पाए । ४ कि तेरा दान गुप्त में हो और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे बदला देगा ॥

५ जब तू प्रार्थना करे तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन को भाता है । मैं तुम से सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके । ६ पर जब तू प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा और द्वार मून्द कर अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे बदला देगा । ७ प्रार्थना करने में अन्यजातियों की नाईं बकबक न करो क्योंकि वे समझते हैं कि हमारे बहुत बोलने से हमारी सुनी जाएगी । ८ सो तुम उन की नाईं न बनो क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले जानता है तुम्हें क्या क्या चाहिए । ९ तुम इस रीति से प्रार्थना करना हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है तेरा नाम पवित्र माना जाए । १० तेरा राज्य आए तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी हो । ११ हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे । १२ और जैसे हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है वैसे ही हमारे

अपराधों को क्षमा कर। १३ और हमें परीक्षा मे न ला बल्कि बुराई से बचा। १४ इस लिये कि यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें भी क्षमा करेगा। १५ पर यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा॥

१६ जब तुम उपवास करो तो कपटियों की नाईं तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाए क्योंकि वे अपने मुंह मलीन करते हैं कि लोगों को उपवासी दिखाई दें मैं तुम से सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके। १७ पर जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो। १८ कि तू लोगों को नहीं पर अपने पिता को जो गुप्त में है उपवासी दिखाई दे और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे बदला देगा॥

१९ अपने लिये पृथ्वी पर धन बटोर कर न रखो जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध देते और चुराते हैं। २० पर अपने लिये स्वर्ग में धन बटोर कर रखो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर न सेंध देते न चुराते हैं। २१ क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। २२ शरीर का दिया आंख है इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सारा शरीर उजाला होगा। २३ पर यदि तेरी आंख बुरी हो तो तेरा सारा शरीर अंधेरा होगा जो उजाला तुझ में है यदि अंधेरा हो तो वह

अंधेरा कैसा भारी है। २४ कोई दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा या एक से मिला रहेगा और दूसरे को हलका जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। २५ इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण की यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे क्या भोजन से प्राण और बस्त्र से शरीर बढ़ कर नहीं। २६ आकाश के पंछियों को देखो वे न बोते हैं न लवते और न खत्तों में बटोरते हैं तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को पालता है क्या तुम उनसे बहुत बढ़ कर नहीं। २७ तुम में से कौन है जो चिन्ता करने से अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है। २८ और बस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो मैदान के सोसनों पर ध्यान करो वे कैसे बढ़ते हैं वे न मिहनत करते न कातते हैं। २९ पर मैं तुम से कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे बिभव में उन में से एक के बराबर पहिने हुए न था। ३० यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जायगी ऐसा पहिनाता है तो हे अल्पविश्वासियो वह क्योंकर तुम्हें न पहिनाएगा। ३१ सो तुम यह चिन्ता न करना कि क्या खाएंगे क्या पीएंगे या क्या पहिनेंगे। ३२ अन्यजाति लोग तो इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तु

चाहिये। ३३ पहिले उस के राज्य और धर्म की खोज करो और ये सब वस्तु भी तुम्हें दी जाएंगी। ३४ सो कल के लिये चिन्ता न करो क्योंकि कल अपनी चिन्ता आप करेगा आज का दुःख आज ही के लिये बहुत है॥

७. दोष न लगाओ कि तुम पर दोष न लगाया जाए। २ क्योंकि जैसे तुम दोष लगाते हो वैसा ही तुम पर लगाया जायगा और जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जायगा। ३ तू अपने भाई की आंख के तिनके को क्यों देखता है और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता। ४ और जब तू अपनी आंख का लट्ठा नहीं देखता तो अपने भाई से क्योंकर कह सकता है ठहर जा मैं तेरी आंख के तिनके को निकाल दूं। ५ हे कपटी पहले अपनी आंख से लट्ठा निकाल तब अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा॥

६ पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो और न अपने मोती सुअरों के आगे डालो ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवों तले रौंदें और फिर कर तुम को फाड़ें॥

७ मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। ८ क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढता है वह पाता है और जो खटखटाता है उस के लिये खोला जायगा। ९ तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि जब उस का पुत्र उस से

रोटी मांगे तो उसे पत्थर दे। १० या मछली मांगे तो उसे सांप दे। ११ सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के बालों को अच्छी वस्तुएं देनी जानते हो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा। १२ जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उन के साथ वैसा ही करो क्योंकि व्यवस्था और नबियों की शिक्षा यही है॥

१३ सकेत फाटक से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। १४ क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं॥

१५ झूठे नबियों से चौकस रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं पर अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए हैं। १६ उन के फलों से उन्हें पहचानोगे क्या झाड़ियों से अंगूर या ऊंट कटारों से अंजीर तोड़ते हैं। १७ योंही हर एक अच्छा पेड़ अच्छे फल लाता और निकम्मा पेड़ बुरे फल लाता है। १८ अच्छा पेड़ बुरे फल नहीं ला सकता न निकम्मा पेड़ अच्छा फल। १९ जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में डाला जाता है। २० सो उन के फलों से उन्हें पहचानोगे। २१ न हर एक जो मुझ से हे प्रभु हे प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा पर

वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। २२ उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे हे प्रभु हे प्रभु क्या हम ने तेरे नाम से नबूवत न की और तेरे नाम से दुष्टात्मा नहीं निकाले और तेरे नाम से बहुत सामर्थ के काम नहीं किए। २३ तब मैं उन से खुल कर कहूंगा मैं ने तुम को कभी नहीं जाना है कुकर्म करनेवालो मुझ से दूर हो। २४ इस लिये जो कोई मेरी ये बातें सुन कर उन्हें माने वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर चटान पर बनाया। २५ और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं और आंधियां चलीं और उस घर पर लगीं पर वह नहीं गिरा क्योंकि उस की नेव चटान पर डाली गई थी। २६ पर जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें न माने वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। २७ और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं और आंधियां चलीं और उस घर पर लगीं और वह गिर कर सत्यानाश हो गया॥

२८ जब यीशु ये बातें कर चुका तो लोग उस के उपदेश से चकित हुए। २९ क्योंकि वह उन के शास्त्रियों के समान तो नहीं पर अधिकारी की नाईं उन्हें उपदेश देता था॥

८. जब वह उस पहाड़ से उतरा तो भीड़ की भीड़ उस के पीछे हो ली। २ और देखो एक कोढ़ी पास आ उसे प्रणाम करके यह कहने लगा कि हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है। ३ यीशु ने हाथ बढ़ा

कर उसे छूआ और कहा मैं चाहता हूं शुद्ध हो जा वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया। ४ यीशु ने उस से कहा देख किसी से न कह पर जाकर अपने आप को याजक को दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा कि उन पर गवाही हो॥

५ जब वह कफ़रनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उस के पास आकर उससे बिनती की। ६ कि हे प्रभु मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है। ७ उस ने उस से कहा मैं आकर उसे चंगा करूंगा। ८ सूबेदार ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले आए पर बचन ही कह तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। ९ मैं भी पराधीन मनुष्य हूं और सिपाही मेरे हाथ में हैं और जब एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और अपने दास को कि यह कर तो वह करता है। १० यह सुन कर यीशु ने अचम्भा किया और जो उस के पीछे आ रहे थे उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि मैं ने इस्राईल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया। ११ और मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे पूरब और पच्छिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वार्ग के राज्य में बैठेंगे। १२ पर राज्य के सन्तान बाहर के अंधेरे में डाल दिये जाएंगे वहां रोना और दांत पीसना होगा। १३ और यीशु ने सूबेदार से कहा जा जैसा तू ने विश्वास किया है वैसा

ही तेरे लिये हो और उस का सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥

१४ यीशु ने पतरस के घर में आकर उस की सास को तप में पड़ा देखा। १५ उस ने उसका हाथ छुआ और तप उस पर से उतर गई और वह उठकर उस की सेवा करने लगी। १६ सांझ को लोग उस के पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दुष्टात्मा थे और उस ने उन आत्माओं को बात कहते ही निकाल दिया और सब बीमारों को चङ्गा किया। १७ कि जो बचन यशायाह नबी के द्वारा कहा गया था पूरा हो कि उस ने हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और बीमारियों को उठा लिया॥

१८ यीशु ने अपने चारों ओर भीड़ की भीड़ देखकर पार जाने की आज्ञा दी। १९ और एक शास्त्री ने पास आकर कहा हे गुरु जहां जहां तू जाएगा मैं तेरे पीछे हो लूंगा। २० यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों के भठ और आकाश के पंछियों के बसेरे होते हैं पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं। २१ एक और चेले ने उस से कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं। २२ यीशु ने उस से कहा तू मेरे पीछे हो ले और मुरदों को अपने मुरदे गाड़ने दे॥

२३ जब वह नाव पर चढ़ा तो उस के चेले उस के पीछे हो लिए। २४ और देखो झील में ऐसे बड़े हिलकोरे

उठे कि नाव लहरों से ढंपने लगी पर वह सोता था। २५ तब उन्हों ने पास आकर उसे यह कहकर जगाया हे प्रभु हमें बचा हम नाश हुये जाते हैं। २६ उस ने उन से कहा हे अल्पविश्वासियो डरते क्यों हो उस ने उठकर आंधी और पानी को डांटा और बड़ा चैन हो गया। २७ और वे लोग अचम्भा कर के कहने लगे यह कैसा मनुष्य है कि आंधी और पानी भी उस की मानते हैं॥

२८ जब वह उस पार गदरेनियों के देश में पहुँचा तो दो मनुष्य जिन में दुष्टात्मा थे कबरों से निकलते हुए उसे मिले जो इतने प्रचण्ड थे कि कोई उस मार्ग से न जा सकता था। २९ और देखो उन्हों ने चिल्लाकर कहा हे परमेश्वर के पुत्र हमारा तुझ से क्या काम क्या तू समय से पहिले हमें पीड़ा देने यहां आया है। ३० उन से कुछ दूर बहुत से सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था। ३१ दुष्टात्माओं ने उस से यह कहकर बिनती की यदि तू हमें निकालता है तो सूअरों के झुण्ड में भेज दे। ३२ उस ने उन से कहा जाओ वे निकलकर सूअरों में पैठे और देखो सारा झुण्ड कड़ाड़े पर से झपटकर पानी में जा पड़ा और डूब मरा। ३३ पर चरवाहे भागे और नगर में जाकर ये सब बातें और जिन में दुष्टात्मा हुये थे उन का हाल सुनाया। ३४ और देखो सारे नगर के लोग यीशु की भेंट को निकले और उसे देखकर बिनती की कि हमारे सिवानों से निकल जा॥

९. वह नाव पर चढ़कर पार गया और अपने नगर में पहुँचा। २ और देखो कई लोग एक झोले के मारे को खाट पर पड़े हुए उस के पास लाए और यीशु ने उन का बिश्वास देखकर उस झोले के मारे से कहा हे पुत्र ढाढ़स बांध तेरे पाप क्षमा हुए। ३ और देखो कई शास्त्रियों ने सोचा कि यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है। ४ यीशु ने उन के मन की बातें जानकर कहा तुम लोग अपने अपने मन में बुरा बिचार क्यों कर रहे हो। ५ सहज क्या है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह कि उठ और चल फिर। ६ पर इस लिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने झोले के मारे से कहा) उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा। ७ वह उठ कर घर चला गया। ८ लोग यह देख कर डर गये और परमेश्वर की जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है बड़ाई करने लगे॥

९ वहां से आगे बढ़कर यीशु ने मत्ती नाम एक मनुष्य को महसूल की चौकी पर बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे हो ले। वह उठकर उस के पीछे हो लिया॥

१० जब वह घर में भोजन करने बैठा तो बहुतेरे महसूल लेनेवाले और पापी आकर यीशु और उस के चेलों के साथ खाने बैठे। ११ यह देखकर फरीसियों ने उस के

चेलों से कहा तुम्हारा गुरु महसूल लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है। १२ उस ने यह सुनकर उन से कहा वैद्य भले चंगों को नहीं पर बीमारों को अवश्य है। १३ पर तुम जाकर इस का अर्थ सीख लो कि मैं बलिदान नहीं पर दया चाहता हूं क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं पर पापियों को बुलाने आया हूं॥

१४ तब यूहन्ना के चेलों ने उस के पास आकर कहा हम और फरीसी क्यों इतना उपवास करते हैं पर तेरे चेले उपवास नहीं करते। १५ यीशु ने उन से कहा क्या बराती जब तक दूलहा उन के साथ रहे शोक कर सकते हैं। पर वे दिन आएंगे कि दूलहा उन से अलग किया जाएगा उस समय वे उपवास करेंगे। १६ कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने पहिरावन पर कोई नहीं लगाता क्योंकि वह पैवन्द पहिरावन से और कुछ खींच लेता है और वह और फट जाता है। १७ न नया दाख रस पुरानी मशकों में भरते हैं ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं और दाख रस बह जाता और मशकें नाश होती हैं पर नया दाख रस नई मशकों में भरते हैं और दोनों बची रहती हैं॥

१८ वह उन से ये बातें कह ही रहा था कि देखो एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा मेरी बेटी अभी मरी है पर चलकर अपना हाथ उस पर रख तो वह जी जाएगी। १९ यीशु उठ कर अपने चेलों समेत उस के

पीछे हो लिया। २० और देखो एक स्त्री ने जिस के बारह बरस से लोहू बहता था पीछे से आ उस के बस्त्र के आंचल को छूआ। २१ क्योंकि अपने जी में सोचा यदि मैं उस के बस्त्र ही को छू लूं तो चङ्गी हो जाऊंगी। २२ यीशु ने फिरकर उसे देखा और कहा बेटी ढाढ़स बांध तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है सो वह स्त्री उसी घड़ी से चंगी हुई। २३ जब यीशु उस सरदार के घर पहुँचा तो बांसली बजाने-वालों और भीड़ को हल्ला मचाते देखकर, २४ कहा अलग हो जाओ लड़की मरी नहीं पर सोती है और वे उस की हंसी करने लगे। २५ जब भीड़ निकाल दी गई तो उस ने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा और वह उठी। २६ इस की चरचा उस सारे देश में फैल गई॥

२७ जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तो दो अंधे उस के पीछे पुकारते हुए चले हे दाऊद के सन्तान हम पर दया कर। २८ जब वह घर में पहुँचा तो वे अंधे उस के पास आए और यीशु ने उन से कहा क्या तुम्हें बिश्वास है कि मैं यह कर सकता हूं उन्हों ने उस से कहा हां प्रभु। २९ तब उस ने उन की आंखें छूकर कहा तुम्हारे बिश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो। ३० और उन की आंखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें चिताकर कहा देखो यह बात कोई न जाने। ३१ पर उन्हों ने निकल कर सारे देश में उस की चरचा फैला दी॥

३२ जब वे बाहर जा रहे थे तो देखो लोग एक गूंगे को जिस में दुष्टात्मा था उस के पास लाए। ३३ जब दुष्टात्मा निकाला गया तो गूंगा बोलने लगा और भीड़ ने अचम्भा कर कहा इस्राईल में ऐसा कभी न देखा गया। ३४ परन्तु फरीसियों ने कहा यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है ॥

३५ तब यीशु सब नगरों और गांवों में फिरते उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता और हर एक बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। ३६ भीड़ को देखकर उसे लोगों पर तरस आया क्योंकि वे बिन रखवाले की भेड़ों की नाईं व्याकुल और भटके हुए थे। ३७ तब उस ने अपने चेलों से कहा पक्के खेत बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। ३८ इस लिये खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे।

१० और उस ने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब बीमारियों और दुर्बलताओं को दूर करें ॥

२ बारह प्रेरितों के नाम ये हैं पहिला शमौन जो पतरस कहलाता है और उस का भाई अन्द्रियास जबदी का पुत्र याकूब और उस का भाई यूहन्ना। ३ फिलिप्पुस और बर तुल्मै तोमा और महसूल लेनेवाला मत्ती हलफै का पुत्र

याकूब और तद्दै। ४ शमौन कनानी और यहूदा इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया॥

५ इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा कि अन्यजातियों की ओर न जाना और सामरियों के किसी नगर में न जाना। ६ पर इस्राईल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाना। ७ और चलते चलते प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। ८ बीमारों को चंगा करो मरे हुओं को जिलाओ कोढ़ियों को शुद्ध करो दुष्टात्माओं को निकालो तुम ने सेंत पाया सेंत दो भी। ९ अपने पटुकों में न सोना न रूपा न तांबा रखना। १० मार्ग के लिये न झोली रक्खो न दो कुरते न जूते न लाठी लो क्योंकि मजदूर को अपना भोजन मिलना चाहिये ११ जिस किसी नगर या गांव में जाओ तो पता लगाओ कि वहां कौन योग्य है और जब तक वहां से न निकलो उसी के यहां रहो। १२ घर में जाते हुए उस को आशीस देना। १३ यदि उस घर के लोग योग्य हों तो तुम्हारा कल्याण उस पर पहुँचेगा पर यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास लौट आएगा। १४ और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी बातें न सुने उस घर या उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालो। १५ मैं तुम से सच कहता हूं कि न्याय के दिन उस नगर

की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा सहने योग्य होगी ॥

१६ देखो मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेड़ियों के बीच में भेजता हूं सो सांपों की नाईं बुद्धिमान और कबूतरों की की नाईं भोले बनो। १७ पर लोगों से चौकस रहो क्योंकि वे तुम्हें महा सभाओं में सौंपेंगे और अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। १८ तुम मेरे लिये हाकिमों और राजाओं के सामने उन पर और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिये पहुँचाए जाओगे। १९ जब वे तुम्हें सौंपें तो यह चिन्ता न करना कि किस रीति से या क्या कहोगे क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जायगा। २० क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो पर तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलनेवाला है। २१ भाई भाई को और पिता पुत्र को घात के लिये सौंपेंगे और लड़के बाले माता पिता के विरोध में उठ कर उन्हें मरवा डालेंगे। २२ मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा। २३ जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं तो दूसरे को भाग जाना मैं तुम से सच कहता हूं तुम इस्राईल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जायगा ॥

२४ चेला अपने गुरू से बड़ा नहीं और न दास अपने स्वामी से। २५ चेले का गुरू के और दास का स्वामी के

बराबर होना ही बहुत है जब उन्हों ने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उस के घरवालों को क्यों न कहेंगे। २६ सो उन से न डरना क्योंकि कुछ ढपा नहीं जो खोला न जाएगा और न कुछ छिपा है जो जाना न जाएगा। २७ जो मैं तुम से अंधेरे में कहता हूं उसे उजाले में कहो और जो कानों कान सुनते हो उसे कोठों पर से प्रचार करो। २८ जो शरीर को घात करते हैं पर आत्मा को घात नहीं कर सकते उन से न डरना पर उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। २९ क्या पैसे में दो गौरैये नहीं बिकतीं तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। ३० तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। ३१ इस लिये डरो नहीं तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो। ३२ जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। ३३ पर जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे नकारे उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने नकारूंगा। ३४ यह न समझो कि मैं पृथिवी पर मिलाप कराने को आया हूं मैं मिलाप कराने को नहीं पर तलवार चलवाने आया हूं। ३५ मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उस के पिता से और बेटी को उस की मां से और बहू को उस की सास से अलग कर दूं। ३६ मनुष्य के बैरी उस के घर ही के लोग होंगे। ३७ जो माता या पिता को मुझ से अधिक

प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं। ३८ और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। ३९ जो अपना प्राण बचाता है वह उसे खोएगा और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है वह उसे बचाएगा। ४० जो तुम्हें ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है। ४१ जो नबी को नबी जानकर ग्रहण करे वह नबी का बदला पाएगा और जो धर्मी जान कर धर्मी को ग्रहण करे वह धर्मी का बदला पाएगा। ४२ जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जान कर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए मैं तुम से सच कहता हूं वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा॥

११. जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका तो वह उन के नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया॥

२ यूहन्ना ने जेलखाने में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उस से यह पूछने भेजा, ३ कि आनेवाला तू ही है या हम दूसरे की बाट जोहें। ४ यीशु ने उत्तर दिया कि जो कुछ तुम सुनते और देखते हो वह जाकर यूहन्ना से कह दो, ५ कि अंधे देखते और लंगड़े चलते फिरते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते और बहिरे सुनते हैं मुरदे जिलाये

जाते हैं और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। ६ और धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए। ७ जब वे वहां से चल दिए तो योशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने गये थे क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को। ८ फिर तुम क्या देखने गये थे क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को। देखो जो कोमल वस्त्र पहिनते हैं वे राजभवनों में रहते हैं। ९ तो फिर क्यों गये थे क्या किसी नबी के देखने को हां मैं तुम से कहता हूं बरन नबी से भी बड़े को। १० यह वही है जिस के विषय में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा मार्ग सुधारेगा। ११ मैं तुम से सच कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से यूहन्ना बप-तिसमा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है। १२ यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य के लिये बल किया जाता है और बलवान उसे ले लेते हैं। १३ यूहन्ना लों सारे नबी और व्यवस्था नबूवत करते रहे। १४ और चाहो तो मानो एलिय्याह जो आनेवाला था वह यही है। १५ जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले। १६ मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूं वे उन बालकों के समान हैं जो बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे से पुकार कर कहते हैं। १७ हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई

और तुम न नाचे हम ने विलाप किया और तुम ने छाती न पीटी । १८ क्योंकि यूहन्ना न खाता आया न पीता और वे कहते हैं उस में दुष्टात्मा है । १९ मनुष्य का पुत्र खाता पीता आया और वे कहते हैं देखो पेटू और पियक्कड़ मनुष्य महसूल लेनेवालों और पापियों का मित्र । पर ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है ॥

२० तब वह उन नगरों को उलहना देने लगा जिन में उस के बहुतेरे सामर्थ के काम किए गए थे क्योंकि उन्हों ने अपना मन नहीं फिराया था । २१ हाय खुराजीन हाय बैतसैदा जो सामर्थ के काम तुम में किए गए यदि वे सूर और सैदा में किए जाते तो टाट ओढ़ कर और राख में बैठकर वे कब के मन फिराते । २२ पर मैं तुम से कहता हूं कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा सहने योग्य होगी । २३ और हे कफरनहूम क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा तू तो अधोलोक तक नीचे जायगा । जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए हैं यदि सदोम में किये जाते तो वह आज तक बना रहता। २४ पर मैं तुम से कहता हूं कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा सहने योग्य होगी ॥

२५ उसी समय यीशु ने कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रक्खा और बालकों पर

प्रगट किया । २६ हां हे पिता क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा ।
२७ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और कोई पुत्र को
नहीं जानता केवल पिता और कोई पिता को नहीं जानता
केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे ।
२८ हे सब थके और बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ
मैं तुम्हें बिश्राम दूंगा । २९ मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो
और मुझ से सीखो क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं
और तुम अपने मन में बिश्राम पाओगे । ३० क्योंकि मेरा
जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है ॥

१२. उस समय यीशु बिश्राम के दिन खेतों में
जा रहा था और उस के चेलों को भूख
लगी तब वे बालें तोड़ तोड़ कर खाने लगे । २ फरीसियों
ने यह देखकर उस से कहा देख तेरे चेले वह काम कर रहे
हैं जो बिश्राम के दिन करना उचित नहीं । ३ उस ने उन से
कहा क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने जब वह और उस
के साथी भूखे हुए तो क्या किया । ४ वह क्योंकर परमेश्वर
के घर में गया और भेंट की रोटियां खाई जिन्हें खाना न
उसे न उस के साथियों को पर केवल याजकों को उचित
था । ५ या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा कि याजक बिश्राम
के दिन मन्दिर में बिश्राम के दिन की बिधि को तोड़ने पर
भी निर्दोष ठहरते हैं । ६ पर मैं तुम से कहता हूं कि यहां
वह है जो मन्दिर से भी बड़ा है । ७ यदि तुम इस का अर्थ

जानते कि मैं दया से प्रसन्न हूं बलिदान से नहीं तो तुम निर्दोषों को दोषी न ठहराते । ८ मनुष्य का पुत्र तो बिश्राम के दिन का भी प्रभु है ।

९ वहां से चलकर वह उन की सभा के घर में आया । और देखो एक मनुष्य था जिस का हाथ सूखा था और उन्हों ने उस पर दोष लगाने के लिये उस से पूछा क्या बिश्राम के दिन चंगा करना उचित है । ११ उस ने उन से कहा तुम में ऐसा कौन है जिस की एक ही भेड़ हो और वह बिश्राम के दिन गड़हे में गिर जाए तो वह उसे पकड़ के न निकाले । १२ मनुष्य का मान भेड़ से कितना बढ़ कर है इस लिये बिश्राम के दिन भलाई करना उचित है । तब उस ने उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा । १३ उस ने बढ़ाया और वह फिर दूसरे हाथ की नाईं अच्छा हो गया । १४ तब फरीसियों ने बाहर जाकर उस के बिरोध में सम्मति की कि उसे क्योंकर नाश करें । १५ यह जान कर यीशु वहां से चला गया और बहुत लोग उस के पीछे हो लिये और उस ने सब को चंगा किया । १६ और उन्हें चिताया कि मुझे प्रगट न करना । १७ कि जो बचन यशायाह नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, १८ कि देखो यह मेरा सेवक है जिसे मैं ने चुना है मेरा प्रिय जिस से मेरा मन प्रसन्न है मैं अपना आत्मा उस पर डालूंगा और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा । १९ वह न झगड़ा करेगा न धूम

मचाएगा। और न बाजारों में कोई उस का शब्द सुनेगा। २० वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा और धूआं देती बत्ती को न बुझाएगा जब तक न्याय को प्रबल न कराए। २१ और अन्यजातियां उस के नाम पर आशा रक्खेंगी॥

२२ तब लोग एक अन्धे गूंगे को जिस में दुष्टात्मा था। उस के पास लाए और उस ने उसे अच्छा किया यहां तक कि वह गूंगा बोलने और देखने लगा। २३ इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे यह क्या दाऊद का सन्तान है २४ परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता। २५ उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा. जिस किसी राज्य में फूट होती है वह उजड़ जाता है और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है बना न रहेगा। २६ और यदि शैतान ही शैतान को निकाले तो वह अपना ही विरोधी हो गया है और उस का राज्य क्योंकर बना रहेगा। २७ भला यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं। इस लिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे। २८ पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है। २९ या क्योंकर कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुस कर उस का माल लूट सकता है

जब तक कि पहले उस बलवन्त को न बांध ले और तब उस का घर लूट लेगा। ३० जो मेरे साथ नहीं वह मेरे बिरोध में है और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिथराता है। ३१ इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी पर आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। ३२ जो कोई मनुष्य के पुत्र के बिरोध में कोई बात कहेगा उस का यह अपराध क्षमा किया जाएगा पर जो कोई पवित्र आत्मा के बिरोध में कुछ कहेगा तो उस का अपराध न इस लोक में न परलोक में क्षमा किया जाएगा। ३३ यदि पेड़ को अच्छा कहो तो उस के फल को भी अच्छा कहो या पेड़ को निकम्मा कहो तो उस के फल को भी निकम्मा कहो क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है। ३४ हे सांप के बच्चो तुम बुरे होकर क्यों कर अच्छी बातें कह सकते हो क्योंकि जो मन में भरा है वही मुंह पर आता है। ३५ भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है। ३६ मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य जो जो निकम्मी बात कहें न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे। ३७ क्योंकि तू अपनी बातों से निर्दोष और अपनी बातों से दोषी ठहराया जाएगा॥

३८ इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने कहा हे गुरु हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं। ३९ उस

ने उन्हें उत्तर दिया कि इस समय के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूँढ़ते हैं पर यूनुस नबी के चिन्ह को छोड़ कोई चिन्ह उन को न दिया जाएगा। ४० यूनुस तीन दिन और तीन रात बड़े जल जन्तु के पेट में था वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथिवी के भीतर रहेगा। ४१ नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ खड़े होकर उन्हें दोषी ठहराएंगे क्योंकि उन्हों ने यूनुस का प्रचार सुन कर मन फिराया और देखो यहां वह है जो यूनुस से भी बड़ा है। ४२ दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ उठ कर उन्हें दोषी ठहराएगी क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी की छोर से आई और देखो यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है। ४३ जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाता है तो सूखी जगहों में बिश्राम ढूँढ़ता फिरता है और पाता नहीं। ४४ तब कहता है कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकला था लौट जाऊंगा और आकर उसे सूना झाड़ा बुहारा और सजा सजाया पाता है। ४५ तब वह जाकर अपने से और बुरे सात आत्माओं को अपने साथ ले आता है और वे उस में पैठ कर वहां बास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी होती है। इस समय के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी॥

४६ जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था तो देखो

उस की माता और भाई बाहर खड़े थे और उस से बातें करनी चाहते थे। ४७ किसी ने उस से कहा देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और तुझ से बातें करनी चाहते हैं। ४८ यह सुन उस ने कहनेवाले को उत्तर दिया कौन है मेरी माता और कौन हैं मेरे भाई। ४९ और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा देखो मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। ५० क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है॥

१३. उसी दिन यीशु घर से निकल कर झील के किनारे जा बैठा। २ और उस के पास ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ कर बैठा और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। ३ और उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं कि देखो एक बोनेवाला बीज बोने निकला। ४ बोते हुए कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुन लिया। ५ कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरे जहां उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने से वे जल्द उग आए। ६ पर सूरज निकलने पर वे जल गए और जड़ न पकड़ने से सूख गए। ७ कुछ झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़ कर उन्हें दबा डाला। ८ पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरे और फल लाए कोई सौ गुना कोई साठ गुना कोई तीस गुना। ९ जिस के कान हों वह सुन ले॥

१० और चेलों ने पास आकर उस से कहा तू उन से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है। ११ उस ने उत्तर दिया कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है पर उन को नहीं। १२ क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उस के पास बहुत हो जाएगा पर जिस के पास कुछ नहीं उस से जो कुछ उस के पास है वह भी ले लिया जाएगा। १३ मैं उन से दृष्टान्तों में इस लिये बातें करता हूं कि वे देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते और नहीं समझते। १४ और उन के विषय में यशायाह की यह नबूवत पूरी होती है कि तुम कानों से तो सुनोगे पर समझोगे नहीं और आंखों से तो देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। १५ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्हों ने अपनी आंखें मूंद ली हैं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिर जाएं और मैं उन्हें चंगा करूं। १६ पर धन्य हैं तुम्हारी आंखें कि वे देखती हैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं। १७ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि बहुत से नबियों और धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें पर न देखीं और जो बातें तुम सुनते हो सुनें पर न सुनीं। १८ सो तुम बोनेवाले का दृष्टान्त सुनो। १९ जो कोई राज्य का बचन सुनकर नहीं समझता उस के मन में जो कुछ बोया गया

था उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है यह वही है जो मार्ग के किनारे बोया गया था। २० और जो पत्थरीली भूमि पर बोया गया यह वह है जो बचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है। २१ पर अपने में जड़ न रखने से वह थोड़े ही दिन का है और जब बचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है तो तुरन्त ठोकर खाता है। २२ जो झाड़ियों में बोया गया यह वह है जो बचन को सुनता है पर इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा बचन को दबाता है और वह फल नहीं लाता। २३ जो अच्छी भूमि में बोया गया यह वह है जो बचन को सुनकर समझता है और फल लाता है कोई सौ गुना कोई साठ गुना कोई तीस गुना ॥

२४ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। २५ पर जब लोग सो रहे थे तो उस का बैरी आकर गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। २६ जब अंकुर निकले और बालें लगीं तो जंगली दाने भी दिखाई दिए। २७ इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उस से कहा हे स्वामी क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था फिर जंगली दाने के पौधे उस में कहां से आए। २८ उस ने उन से कहा यह किसी बैरी का काम है। दासों ने उस से कहा क्या तेरी इच्छा है कि हम जाकर उन को बटोर

लें। २९ उस ने कहा ऐसा नहीं न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए उन के साथ गेहूं भी उखाड़ लो। ३० कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो और कटनी के समय में काटनेवालों से कहूंगा पहिले जंगली दाने के पौधे बटोर कर जलाने के लिए उन के गट्ठे बांध लो और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो॥

३१ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बोया। ३२ वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता तब सब साग पात से बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के पक्षी आकर उस की डालियों पर बसेरा करते हैं॥

३३ उस ने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया कि स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया और होते होते सब खमीर हो गया॥

३४ ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं और बिना दृष्टान्त उन से कुछ न कहता था। ३५ कि जो बचन नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो कि मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुंह खोलूंगा मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं प्रगट करूंगा॥

३६ तब वह भीड़ को छोड़ कर घर में आया और

उस के चेलों ने उस के पास आकर कहा खेत के जंगली दाने का दृष्टान्त हमें समझा दे। ३७ उस ने उन को उत्तर दिया कि अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है। ३८ खेत संसार है अच्छा बीज राज्य के सन्तान और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं। ३९ जिस बैरी ने उन को बोया वह शैतान है कटनी जगत का अन्त है और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं। ४० सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा। ४१ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उस के राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को बटोरेंगे। ४२ और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे वहां रोना और दांत पीसना होगा। ४३ उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूरज की नाईं चमकेंगे। जिस के कान हों वह सुन ले॥

४४ स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया और मारे आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया॥

४५ फिर स्वर्ग का राज्य एक ब्योपारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। ४६ जब उस ने एक बड़े मोल का मोती पाया तो जाकर अपना सब कुछ बेचकर उसे मोल लिया॥

४७ फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है जो समुद्र में डाला गया और हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया। ४८ और जब भर गया तो उस को किनारे पर खींच लाए और बैठकर अच्छी अच्छी तो बरतनों में जमा कीं और निकम्मी निकम्मी फेंक दीं। ४९ जगत के अन्त में ऐसा ही होगा स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे। ५० वहां रोना और दांत पीसना होगा॥

५१ क्या तुम ने ये सब बातें समझीं। ५२ उन्हों ने उस से कहा हां उस ने उन से कहा इस लिये हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है॥

५३ जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तो वहां से चला गया। ५४ और अपने देश में आकर उन की सभा में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगा कि वे चकित होकर कहने लगे इस को यह ज्ञान और सामर्थ के काम कहां से मिले। ५५ यह क्या बढ़ई का बेटा नहीं क्या इस की माता का नाम मरयम और इस के भाइयों के नाम याकूब और यूसुफ और शमौन और यहूदा नहीं। ५६ और क्या इस की सब बहिनें हमारे बीच में नहीं रहतीं फिर इस को यह सब कहां से मिला। ५७ सो उन्हों ने उस के विषय में ठोकर खाई पर

यीशु ने उन से कहा नबी अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता । ५८ और उस ने वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ के काम नहीं किए ॥

१४. उस समय चौथाई के राजा हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी । २ और अपने सेवकों से कहा यह यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला है वह मरे हुओं में से जी उठा है इस लिये ये सामर्थ के काम उस से प्रगट होते हैं । ३ क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण यूहन्ना को पकड़ कर बांधा और जेलखाने में डाला था । ४ इस लिये कि यूहन्ना ने उस से कहा था कि इस को रखना तुझे उचित नहीं । ५ और वह उसे मार डालना चाहता था पर लोगों से डरा क्योंकि वे उसे नबी जानते थे । ६ पर जब हेरोदेस का जन्म दिन आया तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच कर हेरोदेस को खुश किया । ७ इस लिये उस ने किरिया खाकर बचन दिया कि जो कुछ तू मांगे मैं तुझे दूंगा । ८ वह अपनी माता की उस्काई हुई बोली यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले का सिर थाल में यहीं मुझे मंगवा दे । ९ राजा उदास हुआ पर अपनी किरिया के और साथ बैठनेवालों के कारण आज्ञा की कि दे दिया जाए । १० और जेलखाने में लोगों को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवाया । ११ और उस का सिर

थाल में लाया गया और लड़की को दिया गया और वह उस को अपनी मां के पास ले गई। १२ और उस के चेलों ने आकर और उस की लोथ को ले जाकर गाड़ा और जाकर यीशु को समाचार दिया॥

१३ जब यीशु ने यह सुना तो नाव पर चढ़कर वहां से किसी सुनसान जगह एकान्त में चला गया और लोग यह सुन कर नगर में से पैदल उस के पीछे हो लिए। १४ उस ने निकल कर बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया और उस ने उन के बीमारों को चंगा किया। १५ जब सांझ हुई तो उस के चेलों ने उस के पास आकर कहा यह तो सुनसान जगह है और अबेर हो रही है लोगों को बिदा कर कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये भोजन मोल लें। १६ यीशु ने उन से कहा उन का जाना अवश्य नहीं तुम ही इन्हें खाने को दो। १७ उन्हों ने उस से कहा यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछली छोड़ और कुछ नहीं। १८ उस ने कहा उन को यहां मेरे पास ले आओ। १९ तब उस ने लोगों को घास पर बैठने को कहा और उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़कर चेलों को दीं और चेलों ने लोगों को। २० और सब खाकर तृप्त हो गए और उन्हों ने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरी उठाईं। २१ और खानेवाले स्त्रियों

और बालकों को छोड़ पांच हजार पुरुषों के अटकल थे ॥
२२ और उस ने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया कि उस से पहिले पार जाएं जब तक कि वह लोगों को बिदा करे। २३ वह लोगों को बिदा करके प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया और सांझ को वहां अकेला था। २४ उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी क्योंकि हवा सामने की थी। २५ रात के चौथे पहर वह झील पर चलते हुए उन के पास आया। २६ चेले उस को झील पर चलते हुए देख कर घबरा गये और कहने लगे वह भूत है और डर के मारे चिल्लाए। २७ यीशु ने तुरन्त उन से बातें कीं और कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत। २८ पतरस ने उस को उत्तर दिया हे प्रभु यदि तू ही है तो मुझे अपने पास पानी पर आने की आज्ञा दे। २९ उस ने कहा आ तब पतरस नाव पर से उतर कर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। ३० पर हवा को देख कर डर गया और जब डूबने लगा तो चिल्लाकर कहा हे प्रभु मुझे बचा। ३१ यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया और उस से कहा हे अल्प-बिश्वासी क्यों सन्देह किया। ३२ जब वे नाव पर चढ़ गये तो हवा थम गई। ३३ इस पर जो नाव पर थे उन्हों ने उसे प्रणाम करके कहा सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है ॥
३४ वे पार उतर कर गन्नेसरत देश में पहुंचे। ३५ और

वहां के लोगों ने उसे पहचान कर आस पास सारे देश में कहला भेजा और सब बीमारों को उस के पास लाए। ३६ और उस से बिनती करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दे और जितनों ने उसे छुआ वे चंगे हो गए॥

१५. तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे। २ तेरे चेले पुरनियों की रीतों को क्यों टालते हैं कि बिन हाथ धोए रोटी खाते हैं। ३ उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम भी क्यों अपनी रीतों के कारण परमेश्वर की आज्ञा टालते हो। ४ क्योंकि परमेश्वर ने कहा था कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना और जो कोई पिता या माता को बुरा कहे वह मार डाला जाए। ५ पर तुम कहते हो कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुँच सकता था वह संकल्प हो चुका। ६ तो वह अपने पिता का आदर न करे सो तुम ने अपनी रीतों के कारण परमेश्वर का बचन टाल दिया। ७ हे कपटियो यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह नबूवत ठीक की। ८ कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं पर उन का मन मुझ से दूर रहता है। ९ और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की बिधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। १० और उस ने लोगों को अपने पास बुलाकर

उन से कहा सुनो और समझो । ११ जो मुंह में जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता पर जो मुंह से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है । १२ तब चेलों ने आकर उस से कहा क्या तू जानता है कि फरीसियों ने यह बचन सुन कर ठोकर खाई । १३ उस ने उत्तर दिया हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया उखाड़ा जाएगा । १४ उन को जाने दो वे अंधे मार्ग दिखानेवाले हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग दिखाए तो दोनों गड़हे में गिर पड़ेंगे । १५ यह सुनकर पतरस ने उस से कहा यह दृष्टान्त हमें समझा दे । १६ उस ने कहा क्या तुम भी अब तक ना समझ हो । १७ क्या नहीं समझते कि जो कुछ मुंह में जाता वह पेट में पड़ता है और सण्डास में निकल जाता है । १८ पर जो कुछ मुंह से निकलता है वह मन से निकलता है और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है । १९ क्योंकि कुचिन्ता खून परस्त्रीगमन व्यभिचार चोरी झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती हैं । २० ये ही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं पर हाथ बिन धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता ॥

२१ यीशु वहां से निकल कर सूर और सैदा के देशों की ओर गया । २२ और देखो उस देश से एक कनानी स्त्री निकली और चिल्लाकर कहने लगी हे प्रभु दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कर मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता

रहा है । २३ उस ने उसे कुछ उत्तर न दिया और उस के चेलों ने आकर उस से बिनती कर कहा इसे बिदा कर क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती आती है । २४ उस ने उत्तर दिया कि इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया । २५ पर वह आई और उसे प्रणाम कर कहने लगी हे प्रभु मेरी सहायता कर । २६ उस ने उत्तर दिया कि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं । २७ उस ने कहा सत्य है प्रभु पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं जो उन के स्वामियों की मेज से गिरते हैं । २८ इस पर यीशु ने उस को उत्तर देकर कहा कि हे स्त्री तेरा बिश्वास बड़ा है जैसा चाहती तेरे लिए वैसा ही हो और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई ॥

२९ यीशु वहां से चलकर गलील की झील के पास आया और पहाड़ पर चढ़कर वहां बैठ गया । ३० और भीड़ पर भीड़ लंगड़ों अंधों गूंगों टुंडों और बहुत औरों को लेकर उस के पास आये और उन्हें उस के पांवों पर डाला और उस ने उन्हें चंगा किया । ३१ सो जब लोगों ने देखा कि गूंगे बोलते टुंडे चंगे होते लंगड़े चलते और अंधे देखते हैं तो अचम्भा कर के इस्राईल के परमेश्वर की बड़ाई की ॥

३२ यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा मुझे इस भीड़ पर तरस आता है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं और मैं उन्हें भूखा

बिदा करना नहीं चाहता न हो कि मार्ग में थक कर रह जाएं। ३३ चेलों ने उस से कहा हमें इस जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें। ३४ यीशु ने उन से पूछा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं उन्हों ने कहा सात और थोड़ी सी छोटी मछलियां। ३५ तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी। ३६ और उन सात रोटियों और मछलियों को ले धन्यवाद करके तोड़ा और अपने चेलों को देता गया और चेले लोगों को। ३७ सो सब खाकर तृप्त हो गए और बचे हुए टुकड़ों से भरे हुए सात टोकरे उठाए। ३८ और खानेवाले स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार हजार पुरुष थे। ३९ तब वह भीड़ों को बिदा कर नाव पर चढ़ गया और मगदन देश में आया॥

१६. और फरीसियों और सदूकियों ने पास आकर उसे परखने के लिये उस से कहा कि हमें आकाश का कोई चिन्ह दिखा। २ उस ने उन को उत्तर दिया कि सांझ को तुम कहते हो कि फरछा होगा क्योंकि आकाश लाल है, ३ और भोर को कहते हो कि आज आंधी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धुमला है। तुम आकाश का लक्षण देख कर भेद बता सकते हो पर समयों के चिन्हों का भेद नहीं बता सकते। ४ इस समय के बुरे और व्यभि-चारी लोग चिन्ह ढूँढ़ते हैं पर यूनुस के चिन्ह को छोड़

कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा और वह उन्हें छोड़ कर चला गया ॥

५ और चेले पार जाते समय रोटी लेना भूल गए थे। ६ यीशु ने उन से कहा देखो फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना। ७ वे आपस में बिचार करने लगे कि हम रोटी नहीं लाए। ८ यह जानकर यीशु ने उन से कहा हे अल्प बिश्वासियो तुम आपस में क्यों विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं। ९ क्या तुम अब तक नहीं जानते और उन पांच हजार की पांच रोटी स्मरण नहीं करते और न यह कि कितनी टोकरियां उठाई थीं। १० और न उन चार हजार की सात रोटी और न यह कि कितने टोकरे उठाए थे। ११ तुम क्यों नहीं समझते कि मैं ने तुम से रोटियों के विषय में नहीं कहा। फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना। १२ तब उन की समझ में आया कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं पर फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा था ॥

१३ यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं। १४ उन्हों ने कहा कितने तो यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला कहते हैं कितने एलियाह और कितने यिरमयाह या नबियों में से एक कहते हैं। १५ उस ने उन से कहा पर तुम मुझे

क्या कहते हो। १६ शमौन पतरस ने उत्तर दिया कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। १७ यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे शमौन योना के पुत्र तू धन्य है क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं पर मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है यह बात तुझ पर प्रगट की है। १८ और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। १९ मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुञ्जियां दूंगा और जो कुछ तू पृथिवी पर बांधेगा वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तू पृथिवी पर खोलेगा वह स्वर्ग में खुलेगा। २० तब उस ने चेलों को चिताया कि किसी से न कहना कि मैं मसीह हूं॥

२१ उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा कि मुझे अवश्य है कि यरूशलेम जाऊं और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों से बहुत दुख उठाऊं और मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं। २२ इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा कि हे प्रभु परमेश्वर न करे तुझ पर ऐसा कभी न होगा। २३ उस ने फिरकर पतरस से कहा हे शैतान मेरे सामने से दूर हो तू मेरे लिए ठोकर का कारण है क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है। २४ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो

अपने आप को नकारे और अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले। २५ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वह उसे पाएगा। २६ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा। २७ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा और उस समय वह हर एक को उस के कामों के अनुसार देगा। २८ मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कितने ऐसे हैं कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उस के राज्य में आते हुए न देख लें तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे॥

१७. छः दिन के पीछे यीशु ने पतरस और याकूब और उस के भाई यूहन्ना को साथ लिया और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। २ और उन के सामने उस का रूप बदल गया और उस का मुंह सूरज की नाईं चमका और उस का वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया। ३ और देखो मूसा और एलिय्याह उस के साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। ४ इस पर पतरस ने यीशु से कहा हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं एक तेरे लिये एक मूसा के लिये और एक

एलिय्याह के लिये । ५ वह बोल ही रहा था कि देखो एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया और देखो उस बादल में से यह शब्द निकला कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न हूं इस की सुनो । ६ चेले यह सुन कर मुंह के बल गिरे और बहुत डर गए । ७ यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ और कहा उठो डरो मत । ८ तब उन्हों ने अपनी आंखें उठा कर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा ॥

९ जब वे पहाड़ से उतरते थे तो यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी कि जब तक मनुष्य का पुत्र मुरदों में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा किसी से न कहना । १० और उस के चेलों ने उस से पूछा फिर शास्त्री क्यों कहते है कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है । ११ उस ने उत्तर दिया कि एलिय्याह तो आएगा और सब कुछ सुधारेगा । १२ पर मैं तुम से कहता हूं कि एलिय्याह आ चुका और उन्हों ने उसे नहीं पहिचाना पर जो चाहा उस के साथ किया इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन के हाथ से दुख उठाएगा । १३ तब चेलों ने समझा कि उस ने हम से यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले की चरचा की है ॥

१४ जब वे भीड़ के पास पहुंचे तो एक मनुष्य उस के पास आया और घुटने टेक कर कहने लगा । १५ हे प्रभु मेरे पुत्र पर दया कर क्योंकि उस को मिर्गी आती है और

वह बहुत दुःख उठाता है और बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है। १६ और मैं उस को तेरे चेलों के पास लाया था पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके। १७ यीशु ने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी और हठीले लोगो मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा कब तक तुम्हारी सहूंगा उसे यहां मेरे पास लाओ। १८ तब यीशु ने उसे घुड़का और दुष्टात्मा उस में से निकला और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया। १९ तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा हम इसे क्यों नहीं निकाल सके। २० उस ने उनसे कहा अपने बिश्वास की घटी के कारण क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं यदि तुम्हारा बिश्वास राई के दाने के बराबर भी हो तो इस पहाड़ से कह सकोगे कि यहां से सरककर वहां चला जा और वह चला जाएगा और कोई बात तुम्हारे लिये अन्होनी न होगी॥

२१ जब वे गलील में थे तो यीशु ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा। २२ और वे उसे मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा। २३ इस पर वे बहुत उदास हुए॥

२४ जब वे कफरनहूम में पहुँचे तो मन्दिर के लिये कर लेनेवालों ने पतरस के पास आकर पूछा कि क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता उस ने कहा हां देता है। २५ जब वह घर में आया तो यीशु ने उस के पूछने

से पहिले उस से कहा हे शमौन तू क्या समझता है पृथिवी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं अपने पुत्रों से या परायों से। पतरस ने उस से कहा परायों से। २६ यीशु ने उस से कहा तो पुत्र बच गए। २७ तौभी इस लिये कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल और जो मछली पहिले निकले उसे ले तुझे उस का मुंह खोलने पर एक सिक्का मिलेगा उसी को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना॥

१८. उसी घड़ी चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है। २ इस पर उस ने एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया। ३ और कहा मैं तुम से सच कहता हूं यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे। ४ जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा। ५ और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है। ६ पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाये उस के लिये भला होता कि बड़ी चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाता और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता। ७ ठोकरों के कारण संसार पर हाय ठोकरों का लगना अवश्य है पर हाय उस मनुष्य पर

जिस के द्वारा ठोकर लगती है। ८ यदि तेरा हाथ या तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काटकर फेंक दे टुण्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए। ९ और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर फेंक दे। १० काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए। ११ देखो कि तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं। १२ तुम क्या समझते हो यदि किसी मनुष्य के सौ भेड़ें हों और उन में से एक भटक जाए तो क्या निन्नानवे को छोड़कर और पहाड़ों पर जाकर उस भटकी हुई को न ढूंढ़ेगा। १३ और यदि ऐसा हो कि उसे पाये तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह उन निन्नानवे भेड़ों के लिये जो न भटकी थीं इतना आनन्द न करेगा जितना कि इस भेड़ के लिये करेगा। १४ ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नाश हो॥

१५ यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। १६ वह यदि न सुने

लो और एक दो जन को अपने साथ ले जा कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए। १७ यदि वह उन की भी न माने तो मण्डली से कह दे पर यदि वह मण्डली की भी न माने तो तू उसे अन्य जाति और महसूल लेनेवाले के ऐसा जान। १८ मैं तुम से सच कहता हूं जो कुछ तुम पृथिवी पर बांधोगे वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथिवी पर खोलोगे वह स्वर्ग में खुलेगा। १९ फिर मैं तुम से कहता हूं यदि तुम में से दो जन पृथिवी पर किसी बात के लिये जिसे वे मांगें एक मन के हों तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उन के लिये हो जाएगी। २० क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे हुए हैं वहां मैं उन के बीच में हूँ॥

२१ तब पतरस ने पास आकर उस से कहा हे प्रभु यदि मेरा भाई मेरा अपराध करता रहे तो मैं कै बार उसे क्षमा करूं क्या सात बार तक। २२ यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार बरन सात बार के सत्तर गुने तक। २३ इस लिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। जब वह लेखा लेने लगा तो एक जन उस के सामने लाया गया जो दस हजार तोड़े धारता था। २५ जब कि भर देने को उस के पास कुछ न था तो उस के स्वामी ने कहा कि यह और इस की पत्नी और लड़के बाले और जो कुछ इस

का है सब बेचा जाए और वह करज भर दिया जाए। २६ इस पर उस दास ने गिर कर उसे प्रणाम किया और कहा हे स्वामी धीरज धर मैं सब कुछ भर दूंगा। २७ तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया और उस का धार क्षमा किया। २८ पर जब वह दास बाहर निकला तो उस के संगी दासों में से एक उस को मिला जो उस के सौ दीनार धारता था उस ने उसे पकड़ कर उस का गला घोंटा और कहा जो कुछ तू धारता है भर दे। २९ इस पर उस का संगी दास गिर कर उस से बिनती करने लगा कि धीरज धर मैं सब भर दूंगा। ३० उस ने न माना पर जाकर उसे जेलखाने में डाल दिया कि जब तक करज को भर न दे तब तक वहीं रहे। ३१ उस के संगी दास यह जो हुआ था देख कर बहुत उदास हुए और जाकर अपने स्वामी को सारा हाल बता दिया। ३२ तब उस के स्वामी ने उस को बुला कर उस से कहा हे दुष्ट दास तू ने जो मुझ से बिनती की तो मैं ने तुझे वह सारा करज क्षमा किया। ३३ सो जैसे मैं ने तुझ पर दया की वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना चाहिए न था। ३४ और उस के स्वामी ने क्रोध कर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ सौंप दिया कि जब तक वह सब करज भर न दे तब तक उन के हाथ में रहे। ३५ यों ही यदि तुम में से हर एक

अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है तुम से भी करेगा ॥

१९. जब यीशु ये बातें कह चुका तो गलील से चला गया और यहूदिया के देश में यरदन के पार आया। २ और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली और उस ने उन्हें वहां चंगा किया ॥

३ तब फरीसी उस की परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे क्या हर एक कारण से अपनी स्त्री को त्यागना उचित है। ४ उस ने उत्तर दिया क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिस ने उन्हें बनाया उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, ५ कि इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे। ६ सो वे अब दो नहीं पर एक तन हैं इस लिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे। ७ उन्हों ने उस से कहा फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे। ८ उस ने उन से कहा मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी पत्नी को छोड़ने दिया पर आरम्भ से ऐसा न था। ९ और मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करे वह व्यभिचार करता है और जो उस छोड़ी हुई से ब्याह करे वह भी व्यभिचार करता

है। १० चेलों ने उस से कहा यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है तो ब्याह करना अच्छा नहीं। ११ उस ने उन से कहा सब यह बचन ग्रहण नहीं कर सकते केवल वे जिन को यह दान दिया गया है। १२ क्योंकि कोई नपुंसक ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे और कोई नपुंसक ऐसे हैं जिन्हें मनुष्यों ने नपुंसक बनाया और कोई नपुंसक ऐसे हैं जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने आप को नपुंसक बनाया है। जो इस को ग्रहण कर सकता है वह ग्रहण करे॥

१३ तब लोग बालकों को उस के पास लाए कि वह उन पर हाथ रक्खे और प्रार्थना करे पर चेलों ने उन्हें डांटा। १४ यीशु ने कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। १५ और वह उन पर हाथ रखकर वहां से चला गया॥

१६ और देखो एक मनुष्य ने पास आकर उस से कहा हे गुरु मैं कौन सा भला काम करूं कि अनन्त जीवन पाऊं। १७ उस ने उस से कहा तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है भला तो एक ही है पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है तो आज्ञाओं को माना कर। १८ उस ने उस से कहा कौन सी आज्ञाएं यीशु ने कहा यह कि खून न करना व्यभिचार न करना चोरी न

करना झूठी गवाही न देना । १९ अपने पिता और अपनी माता का आदर करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना । २० उस जवान ने उस से कहा इन सब को मैं ने माना अब मुझ में किस बात की घटी है । २१ यीशु ने उस से कहा यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा अपना माल बेचकर कंगालों को दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा और आकर मेरे पीछे हो ले । २२ पर वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनी था ॥

२३ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है । २४ फिर तुम से कहता हूं कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है । २५ यह सुनकर चेलों ने बहुत चकित होकर कहा फिर किस का उद्धार हो सकता है । २६ यीशु ने उन की ओर देख कर कहा मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है । २७ इस पर पतरस ने उस से कहा कि देख हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए हैं सो हमें क्या मिलेगा । २८ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि नई उत्पत्ति में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राईल के बारह गोत्रों का

न्याय करोगे। २६ और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़केबालों या खेतों को मेरे नाम के लिये छोड़ दिया उस को सौ गुना मिलेगा और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। ३० पर बहुतेरे जो पहिले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं पहिले होंगे॥

२०. स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है जो सवेरे निकला कि अपने दाख की बारी में मजदूरों को लगाए। २ और उस ने मजदूरों से एक दीनार रोज ठहरा कर उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। ३ फिर पहर एक दिन चढ़े निकल कर और औरों को बाजार में बेकार खड़े देखकर, ४ उन से कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ ठीक है तुम्हें दूंगा सो वे भी गए। ५ फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकल कर वैसा ही किया। ६ घड़ी एक दिन रहे फिर निकल कर औरों को खड़े पाया और उन से कहा तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े रहे। उन्हों ने उस से कहा इस लिये कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया। ७ उस ने उन से कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ। ८ सांझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा मजदूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहिलों तक उन्हें मजदूरी दे दे। ९ सो जब वे आए जो घड़ी एक दिन रहे लगाए गए थे तो उन्हें एक एक दीनार मिला। १० जब

पहिले आए तो यह समझा कि हमें अधिक मिलेगा पर उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला। ११ जब मिला तो वे गृहस्थ पर कुड़कुड़ा के कहने लगे, १२ कि इन पिछलों ने एक ही घड़ी काम किया और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया जिन्हों ने दिन भर का भार उठाया और घाम सहा। १३ उस ने उन में से एक को उत्तर दिया कि हे मित्र मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता क्या तू ने मुझ से एक दीनार न ठहराया। १४ जो तेरा है उठा ले और चला जा मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे उतना ही इस पिछले को भी दूं। १५ क्या उचित नहीं कि अपने माल से जो चाहूं सो करूं क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है। १६ इसी रीति से जो पिछले हैं वे पहिले होंगे और जो पहिले हैं वे पिछले होंगे॥

१७ यीशु यरूशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया और मार्ग में उन से कहने लगा, १८ कि देखो हम यरूशलेम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे। १९ और उस को अन्य जातियों के हाथ सौंपेंगे कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं और कोड़े मारें और क्रूस पर चढ़ाएं और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा॥

२० तब जबदी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के साथ उस के पास आकर प्रणाम किया और उस से कुछ

मांगने लगी। २१ उस ने उस से कहा तू क्या चाहती है वह उस से बोली यह कह कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दहिने ओर एक तेरे बाएं बैठे। २२ यीशु ने उत्तर दिया तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो जो कटोरा मैं पीने पर हूं क्या तुम पी सकते हो उन्हों ने उस से कहा पी सकते हैं। २३ उस ने उन से कहा तुम मेरा कटोरा तो पीओगे पर अपने दहिने बाएं किसी को बिठाना मेरा काम नहीं पर जिन के लिये मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया उन्हीं के लिए है। २४ यह सुनकर दसों चेले उन दोनों भाइयों पर रिसियाए। २५ यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा तुम जानते हो कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं और जो बड़े हैं वे उन पर अधिकार जताते हैं। २६ पर तुम में ऐसा न होगा पर जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। २७ और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने। २८ जैसे कि मनुष्य का पुत्र इस लिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल किई जाए पर इस लिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना प्राण दे॥

२९ जब वे यरीहो से निकलते थे तो एक बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली। ३० और देखो दो अंधे जो सड़क के किनारे बैठे थे यह सुन कर कि यीशु जा रहा है पुकारकर कहने लगे कि हे प्रभु दाऊद के सन्तान हम पर दया

कर। ३१ लोगों ने उन्हें डांटा कि चुप रहें पर वे और भी चिल्लाकर बोले हे प्रभु दाऊद के सन्तान हम पर दया कर। ३२ तब यीशु ने खड़े होकर उन्हें बुलाया और कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं। ३३ उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु यह कि हमारी आंखें खुल जाएं। ३४ यीशु ने तरस खाकर उन की आंखें छुईं और वे तुरन्त देखने लगे और उस के पीछे हो लिए॥

२१. जब वे यरूशलेम के निकट पहुँचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास आए तो यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा, २ अपने सामने के गांव में जाओ वहां पहुँचते ही एक गदही बन्धी हुई और उस के साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा उन्हें खोल कर मेरे पास ले आओ। ३ यदि तुम से कोई कुछ कहे तो कहो कि प्रभु को इन का प्रयोजन है तब वह तुरन्त उन्हें भेज देगा। ४ यह इस लिये हुआ कि जो बचन नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, ५ कि सिय्योन की बेटी से कहो देख तेरा राजा तेरे पास आता वह नम्र और गदहे पर बैठा है बरन लादू के बच्चे पर। ६ चेलों ने जाकर जैसा यीशु ने उन्हें कहा था वैसा ही किया। ७ और गदही और बच्चे को लाकर उन पर अपने कपड़े डाले और वह उन पर बैठ गया। ८ और बहुतेरे लोगों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए और और लोगों ने पेड़ों से डालियां काटकर मार्ग में

बिछाईं। ६ और जो भीड़ आगे आगे जाती और पीछे पीछे चली आती थी पुकार पुकारकर कहती थी कि दाऊद के सन्तान को होशाना धन्य वह जो प्रभु के नाम से आता है आकाश में होशाना। १० जब उस ने यरूशलेम में प्रवेश किया तो सारे नगर में हलचल पड़ गई और लोग कहने लगे यह कौन है। ११ लोगों ने कहा यह गलील के नासरत का नबी यीशु है॥

१२ यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर उन सब को जो मन्दिर में लेन देन कर रहे थे निकाल दिया और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचनेवालों की चौकियां उलट दीं। १३ और उन से कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा पर तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो। १४ और अंधे और लंगड़े मन्दिर में उस के पास आए और उस ने उन्हें चंगा किया। १५ पर जब महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्भुत कामों को जो उस ने किए और लड़कों को मन्दिर में दाऊद के सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा तो रिसिया कर उस से कहने लगे क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं। १६ यीशु ने उन से कहा हां क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा कि बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से तू ने स्तुति सिद्ध कराई। १७ तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर बैतनिय्याह को गया और वहां रात बिताई॥

१८ भोर को जब वह नगर को लौट रहा था तो उसे भूख लगी। १९ और अंजीर का एक पेड़ सड़क के किनारे देख कर वह उस के पास गया और पत्तों को छोड़ उस में और कुछ न पाकर उस से कहा अब से तुझ में फिर कभी फल न लगे। और अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया। २० यह देखकर चेलों ने अचम्भा किया और कहा यह अंजीर का पेड़ क्योंकर तुरन्त सूख गया। २१ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूं यदि तुम बिश्वास रक्खो और संदेह न करो तो न केवल यह करोगे जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है पर यदि इस पहाड़ से भी कहोगे कि उखड़ जा और समुद्र में जा पड़ तो यह हो जायगा। २२ और जो कुछ तुम प्रार्थना में बिश्वास करके मांगोगे सो पाओगे॥

२३ वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर रहा था कि महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने उस के पास आकर पूछा तू ये काम किस अधिकार से करता है और तुझे यह अधिकार किस ने दिया है। २४ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं यदि वह मुझे बताओगे तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि ये काम किस अधि-कार से करता हूं। २५ यूहन्ना का बपतिसमा कहां से था स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था तब वे आपस में बिवाद करने लगे कि यदि हम कहें स्वर्ग की

ओर से तो वह हम से कहेगा फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की। २६ और यदि कहें मनुष्यों की ओर से तो हमें भीड़ का डर है क्योंकि वे सब यूहन्ना को नबी जानते हैं। २७ सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं जानते। उस ने भी उन से कहा तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। २८ तुम क्या समझते हो किसी मनुष्य के दो पुत्र थे उस ने पहिले के पास जाकर कहा हे पुत्र आज दाख की बारी में काम कर। २९ उस ने उत्तर दिया मैं नहीं जाऊंगा पर पीछे पछताकर गया। ३० फिर दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा उस ने उत्तर दिया जी हां जाता हूं पर गया नहीं। ३१ इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी की उन्हों ने कहा पहिले ने। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि महसूल लेनेवाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। ३२ क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया और तुम ने उस की प्रतीति न की पर महसूल लेनेवालों और वेश्याओं ने उस की प्रतीति की और तुम यह देख कर पीछे भी न पछताए कि उस की प्रतीति करते॥

३३ एक और दृष्टान्त सुनो। एक गृहस्थ था जिस ने दाख की बारी लगाई और उस के चारों ओर बाड़ा बांधा और उस में रस का कुंड खोदा और गुम्मट बनाया और

किसानों को उस का ठीका देकर परदेश चला गया। ३४ जब फल का समय निकट आया तो उस ने अपने दासों को उस का फल लेने के लिये किसानों के पास भेजा। ३५ पर किसानों ने उस के दासों को पकड़ के किसी को पीटा और किसी को मार डाला और किसी को पत्थर-वाह किया। ३६ फिर उस ने और दासों को भेजा जो पहिलों से अधिक थे और उन्हों ने उन से भी वैसा ही किया। ३७ पीछे उस ने अपने पुत्र को उन के पास यह कहकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। ३८ पर किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा यह तो वारिस है आओ उसे मार डालें और उस की मीरास ले लें। ३९ और उन्हों ने उसे पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला। ४० इस लिये जब दाख की बारी का स्वामी आएगा तो उन किसानों से क्या करेगा। ४१ उन्हों ने उस से कहा वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा और दाख की बारी का ठीका और किसानों को देगा जो समय पर उसे फल दिया करेंगे। ४२ यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को राजों ने निकम्मा ठहराया था वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया। ४३ यह प्रभु की ओर से हुआ और हमारे देखने में अद्भुत है। इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा

और ऐसी जाति को जो उस का फल लाए दिया जाएगा। ४४ जो इस पत्थर पर गिरेगा वह चूर हो जाएगा और जिस पर वह गिरेगा उस को पीस डालेगा। ४५ महायाजक और फरीसी उस के दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए कि वह हमारे विषय में कहता है। ४६ और उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा पर लोगों से डर गए क्योंकि वे उसे नबी जानते थे॥

२२. इस पर यीशु फिर उन से दृष्टान्तों में कहने लगा। २ स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिस ने अपने पुत्र का ब्याह किया। ३ और उस ने अपने दासों को भेजा कि नेवतहरियों को ब्याह के भोज में बुलाएं पर उन्हों ने आना न चाहा। ४ फिर उस ने और दासों को यह कहकर भेजा कि नेवतहरियों से कहो देखो मैं भोज तैयार कर चुका हूं और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं और सब कुछ तैयार है ब्याह के भोज में आओ। ५ पर वे बेपरवाई करके चल दिए कोई अपने खेत को कोई अपने ब्योपार को। ६ बाकियों ने उस के दासों को पकड़कर अनादर किया और मार डाला। ७ राजा ने क्रोध किया और अपनी सेना भेजकर उन खूनियों को नाश किया और उन के नगर को फूंक दिया। ८ तब उस ने अपने दासों से कहा ब्याह का भोज तो तैयार है पर नेवतहरी योग्य नहीं ठहरे। ९ इस लिये चौराहों में जाओ और जितने लोग तुम्हें मिलें सब को ब्याह के भोज में बुला

लाओ। १० सो उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे क्या भले जितने मिले सब को इकट्ठे किया और ब्याह का घर जेवनहारों से भर गया। ११ जब राजा जेवनहारों के देखने को भीतर आया तो उस ने वहां एक मनुष्य को देखा जो ब्याह का बस्त्र न पहिने था। १२ उस ने उस से पूछा हे मित्र तू ब्याह का बस्त्र पहिने बिना यहां क्योंकर आ गया। उस का मुंह बन्द हो गया। १३ तब राजा ने सेवकों से कहा इस के हाथ पांव बांधकर उसे बाहर अंधेरे में डाल दो वहां रोना और दांत पीसना होगा। १४ क्योंकि बुलाए हुए बहुत पर चुने हुए थोड़े हैं॥

१५ तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया कि उस को क्योंकर बातों में फंसाएं। १६ सो उन्हों ने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उस के पास यह कहने को भेजा कि हे गुरु हम जानते हैं कि तू सच्चा है और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है और किसी की परवा नहीं करता क्यों कि तू मनुष्यों का मुंह देख कर बातें नहीं करता। १७ सो हमें बता तू क्या समझता है कैसर को कर देना उचित है कि नहीं। १८ यीशु ने उन की दुष्टता जानकर कहा हे कपटियो मुझे क्यों परखते हो। १९ कर का सिक्का मुझे दिखाओ तब वे उस के पास एक दीनार ले आये। २० उस ने उस से पूछा यह मूर्त्ति और नाम किस का है। २१ उन्हों ने उस से कहा कैसर का

तब उस ने उन से कहा जो कैसर का है वह कैसर को और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो। २२ यह सुनकर उन्हों ने अचम्भा किया और उसे छोड़कर चले गये॥

२३ उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं उस के पास आये और उस से पूछा, २४ कि हे गुरु मूसा ने कहा था यदि कोई बिना सन्तान मर जाए तो उस का भाई उस की पत्नी को व्याह कर अपने भाई के लिये बंस उत्पन्न करे। २५ अब हमारे यहां सात भाई थे पहिला ब्याह करके मर गया और सन्तान न होने के कारण अपनी पत्नी को अपने भाई के लिये छोड़ गया। २६ इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने किया सातों तक। २७ सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। २८ सो जी उठने पर वह सातों में से किस की पत्नी होगी क्योंकि वह सब की पत्नी हुई थी। २९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते इस कारण भूल में पड़ गए हो। ३० क्योंकि जी उठने पर ब्याह शादी न होगी पर वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों की नाईं होंगे। ३१ पर मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह बचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा, ३२ कि मैं इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं। सो वह मरे हुओं का नहीं पर जीवतों का

परमेश्वर है। ३३ यह सुन कर लोग उस के उपदेश से चकित हुए॥

३४ जब फरीसियों ने सुना कि उस ने सदूकियों का मुंह बन्द कर दिया तो वे इकट्ठे हुए। ३५ और उन में से एक ब्यवस्थापक ने परखने के लिये उस से पूछा। ३६ हे गुरु ब्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है। ३७ उस ने उस से कहा तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे जीव और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। ३८ बड़ी और मुख्य आज्ञा यही है। ३९ और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ४० ये ही दो आज्ञा सारी ब्यवस्था और नबियों का आधार है॥

४१ जब फरीसी इकट्ठे थे तो यीशु ने उन से पूछा, ४२ कि मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो वह किस का सन्तान है उन्हों ने उस से कहा दाऊद का। ४३ उस ने उन से पूछा तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्योंकर कहता है, ४४ कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा मेरे दहिने बैठ जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं। ४५ भला जब दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उस का पुत्र क्योंकर ठहरा। ४६ उस के उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका पर उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का हियाव न हुआ॥

२३. तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा। २ शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। ३ इस लिये वे तुम से जो कुछ कहें वह करना और मानना पर उन के से काम न करना क्योंकि वे कहते हैं और करते नहीं। ४ वे ऐसे भारी बोझ जिन को उठाना कठिन है बांधकर उन्हें मनुष्यों के कांधों पर रखते हैं पर आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते। ५ वे अपने सब काम लोगों को दिखाने को करते हैं वे अपने ताबीजों को चौड़े करते और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं। ६ जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें और सभा में मुख्य मुख्य आसन, ७ और बाजारों में नमस्कार और मनुष्यों में रब्बी रब्बी कहलाना उन्हें भाता है। ८ पर तुम रब्बी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है और तुम सब भाई हो। ९ और पृथिवी पर किसी को अपना पिता न कहना क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है जो स्वर्ग में है। १० और स्वामी भी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है अर्थात् मसीह। ११ जो तुम में बड़ा हो वह तुम्हारा सेवक बने। १२ जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जाएगा और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा॥

१३ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते

हो न आप ही उस में प्रवेश करते हो और न उस में प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो ॥

१५ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो और जब वह मत में आया है तो उसे अपने से दूना नरकी बनाते हो ॥

१६ हे अंधे अगुवो तुम पर हाय जो कहते हो यदि कोई मन्दिर की किरिया खाए तो कुछ नहीं पर यदि कोई मन्दिर के सोने की किरिया खाए तो उस से बंध जाएगा। १७ हे मूर्खो और अंधो कौन बड़ा है सोना या वह मन्दिर जिस से सोना पवित्र होता है। १८ फिर कहते हो यदि कोई बेदी की किरिया खाए तो कुछ नहीं पर जो भेंट उस पर है यदि कोई उस की किरिया खाए तो बंध जाएगा। १९ हे अंधो कौन बड़ा है भेंट या बेदी जिस से भेंट पवित्र होती है। २० इस लिये जो बेदी की किरिया खाता है वह उस की और जो कुछ उस पर है उस की भी किरिया खाता है। २१ और जो मन्दिर की किरिया खाता है वह उस की और उस में रहनेवाले की भी किरिया खाता है। २२ और जो स्वर्ग की किरिया खाता है वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठनेवाले की भी किरिया खाता है ॥

२३ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो

पर तुम ने व्यवस्था की भारी भारी बातों को अर्थात् न्याय और दया और बिश्वास को छोड़ दिया है। चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते। २४ हे अंधे अगुवो जो मच्छर को तो छान डालते हो पर ऊंट को निगल जाते हो॥

२५ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर तो मांजते हो पर वे भीतर अंधेर और असंयम से भरे हैं। २६ हे अंधे फरीसी पहिले कटोरे और थाली के भीतर साफ कर कि वे बाहर भी साफ हों॥

२७ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम चूना फेरे हुए कबरों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं पर भीतर मुरदों की हड्डियां और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। २८ इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो पर भीतर कपट और अधर्म से भरे हो॥

२९ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम नबियों की कबरें बनाते और धर्मियों की कबरें संवारते हो। ३० और कहते हो कि यदि हम अपने बाप दादों के दिनों में होते तो नबियों के खून में उन के साथी न होते। ३१ इस से तो तुम अपने पर आप ही गवाही देते हो कि तुम नबियों के घातकों के सन्तान हो। ३२ सो

तुम अपने बापदादों के पाप का घड़ा भर दो। ३३ हे सांपो हे करैतों के बच्चो तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे। ३४ इस लिये देखो मैं तुम्हारे पास नबियों और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूं और तुम उन में से कितनों को मार डालोगे और क्रूस पर चढ़ाओगे और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे और नगर से नगर खदेड़ते फिरोगे। ३५ जिस से धर्मी हाबील से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकरयाह तक जिसे तुम ने मन्दिर और बेदी के बीच मार डाला था जितने धर्मियों का लोहू पृथिवी पर बहाया गया है वह सब तुम्हारे सिर पर आएगा। ३६ मैं तुम से सच कहता हूं ये सब बातें इस समय के लोगों पर पड़ेंगी॥

३७ हे यरूशलेम हे यरूशलेम तू जो नबियों को मार डालती और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें पत्थरवाह करती है कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूं पर तुम ने न चाहा। ३८ देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। ३९ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं अब से जब तक तुम न कहोगे कि धन्य वह जो प्रभु के नाम से आता है तब तक तुम मुझे कभी न देखोगे॥

२४. जब यीशु मन्दिर से निकल कर जा रहा था तो उस के चेले उस को मन्दिर की रचना दिखाने को उस के पास आए। २ उस ने उन से कहा क्या

तुम यह सब नहीं देखते मैं तुम से सच कहता हूँ यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जायगा॥

३ और जब वह जैतून के पहाड़ पर बैठा था तो चेलों ने अलग उस के पास आकर कहा हम से कह ये बातें कब होंगी और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा। ४ यीशु ने उन को उत्तर दिया चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए। ५ क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे मैं मसीह हूं और बहुतों को भरमाएंगे। ६ तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चरचा सुनोगे देखो न घबराना क्योंकि इन का होना अवश्य है पर उस समय अन्त न होगा। ७ क्योंकि जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा और जगह जगह अकाल पड़ेंगे और भुईंडोल होंगे। ८ ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी। ९ तब वे क्लेश दिलाने के लिये तुम्हें पकड़वाएंगे और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर करेंगे। १० तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे और एक दूसरे को पकड़वाएंगे और एक दूसरे से बैर रक्खेंगे। ११ और बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे और बहुतों को भरमाएंगे। १२ और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा। १३ पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा। १४ और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर गवाही हो और तब अन्त आ जाएगा॥

१५ सो जब तुम उस उजाड़नेवाली घिनित वस्तु को जिस की चरचा दानिय्येल नबी के द्वारा हुई थी पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो (जो पढ़े वह समझे)। १६ तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं। १७ जो कोठे पर हो वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे। १८ और जो खेत में हो वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। १९ उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी उन के लिये हाय हाय। २० और प्रार्थना किया करो कि तुम्हें जाड़े में या विश्राम के दिन भागना न पड़े। २१ क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा कि जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ है और न कभी होगा। २२ और यदि वे दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता पर चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे। २३ उस समय यदि कोई तुम से कहे देखो मसीह यहां है या वहां है तो प्रतीति न करना। २४ क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे ऐसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। २५ देखो मैं ने पहिले से तुम से कह दिया है। २६ इस लिये यदि वे तुम से कहें देखो वह जंगल में है तो बाहर न निकल जाना। देखो वह कोठरियों में है तो प्रतीति न करना। २७ क्योंकि जैसे बिजली पूरब से निकलकर पच्छिम तक चमकती जाती है वैसा ही मनुष्य के पुत्र

का भी आना होगा । २८ जहां लोथ हो वहां गिद्ध इकट्ठे होंगे ॥

२९ उन दिनों के क्लेश के पीछे तुरन्त सूरज अंधेरा हो जाएगा और चांद प्रकाश न देगा तारे आकाश से गिरेंगे और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी । ३० तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा और तब पृथिवी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे और मनुष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे । ३१ और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक चारों दिशा से उस के चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे ॥

३२ अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो । जब उस की डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं तो तुम जान लेते हो कि धूप काल निकट है । ३३ इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो तो जान लो कि वह निकट है बरन द्वार ही पर है । ३४ मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें तब तक यह लोग जाते न रहेंगे । ३५ आकाश और पृथिवी टल जाएंगे पर मेरी बातें कभी न टलेंगी । ३६ उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता न स्वर्ग के दूत न पुत्र पर केवल पिता । ३७ जैसे नूह के दिन थे वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा । ३८ क्योंकि जैसे जल प्रलय से पहिले के दिनों

में जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा उसी दिन तक लोग खाते पीते और उन में ब्याह शादी होती थी। ३६ और जब तक जल प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया तब तक उन को कुछ ज्ञान न पड़ा वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। ४० तब दो जन खेत में होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा। ४१ दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ी जाएगी। ४२ इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। ४३ पर यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता कि चोर किस पहर आएगा तो जागता रहता और अपने घर में सेंध लगने न देता। ४४ इस लिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी के विषय तुम सोचते भी नहीं उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आएगा। ४५ सो वह बिश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है जिसे स्वामी ने अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराया कि समय पर उन्हें भोजन दे। ४६ धन्य है वह दास जिसे उस का स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। ४७ मैं तुम से सच कहता हूं वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर सरदार ठहराएगा। ४८ पर यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे कि मेरे स्वामी के आने में देर है। ४९ और अपने साथी दासों को पीटने लगे और पियक्कड़ों के साथ खाए पीए। ५० तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा जब वह उस

की बाट न जोहता हो और ऐसी घड़ी कि वह न जानता हो। ५१ और उसे भारी ताड़ना देकर उस का भाग कपटियों के साथ ठहराएगा। वहां रोना और दांत पीसना होगा॥

२५. तब स्वर्ग का राज्य दस कुंवारियों के समान ठहरेगा जो अपनी मशालें लेकर दूलहे से भेंट करने को निकलीं। २ उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं। ३ मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं पर अपने साथ तेल न लिया। ४ पर समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भर लिया। ५ जब दूलहे के आने में देर हुई तो वे सब ऊंघने लगीं और सो गईं। ६ आधी रात को धूम मची कि देखो दूलहा आ रहा है उस से भेंट करने को निकलो। ७ तब वे सब कुंवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं। ८ और मूर्खों ने समझदारों से कहा अपने तेल में से कुछ हमें भी दो क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। ९ पर समझदारों ने उत्तर दिया कि क्या जाने हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो सो भला है कि तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये मोल लो। १० ज्यों वे मोल लेने को जा रही थीं त्योंही दूलहा आ पहुँचा और जो तैयार थीं वे उस के साथ ब्याह के घर में गईं और द्वार बन्द किया गया। ११ पीछे वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं हे स्वामी स्वामी हमारे लिये द्वार

खोल दे । १२ उस ने उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूं मैं तुम्हें नहीं जानता । १३ इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम न वह दिन और न वह घड़ी जानते हो ॥

१४ क्योंकि यह उस मनुष्य का सा हाल है जिस ने परदेस जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी संपत्ति उन को सौंप दी । १५ उस ने एक को पांच तोड़े दूसरे को दो तीसरे को एक हर एक को उस की सामर्थ के अनुसार दिया और तब परदेश चला गया । १६ तब जिस को पांच तोड़े मिले थे उस ने तुरन्त जाकर उन से लेन देन किया और पांच तोड़े और कमाए । १७ इसी रीति से जिस को दो मिले थे उस ने भी दो और कमाए । १८ पर जिस को एक मिला था उस ने जाकर मिट्टी खोदी और अपने स्वामी के रुपये छिपा दिए । १९ बहुत दिन पीछे उन दासों का स्वामी आकर उन से लेखा लेने लगा । २० जिस को पांच तोड़े मिले थे उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा हे स्वामी तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे देख मैं ने पांच तोड़े और कमाए । २१ उस के स्वामी ने उस से कहा धन्य हे अच्छे और बिश्वासयोग्य दास तू थोड़े में बिश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुत के ऊपर अधिकार दूंगा अपने स्वामी के आनन्द में भागी हो । २२ और जिस को दो तोड़े मिले थे उस ने भी आकर कहा हे स्वामी तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे देख मैं ने दो तोड़े और कमाए । २३ उस के स्वामी ने उस से

कहा धन्य हे अच्छे और बिश्वासयोग्य दास तू थोड़े में बिश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुत के ऊपर अधिकार दूंगा अपने स्वामी के आनन्द में भागी हो। २४ तब जिस को एक तोड़ा मिला था उस ने आकर कहा हे स्वामी मैं तुझे जानता था कि तू कठोर मनुष्य है जहां नहीं बोया वहां काटता है और जहां नहीं छींटा वहां से बटोरता है। २५ सो मैं डरा और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया देख जो तेरा है वह तुझे मिल गया। २६ उस के स्वामी ने उसे उत्तर दिया कि हे दुष्ट और आलसी दास तू तो जानता था कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां काटता हूं और जहां मैं ने नहीं छींटा वहां से बटोरता हूं। २७ सो तुझे चाहिए था कि मेरा रुपया सर्राफों को देता तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता। २८ इस लिये वह तोड़ा उस से ले लो और जिस के पास दस तोड़े हैं उसी को दो। २९ क्योंकि जिस किसी के पास है उसे और दिया जाएगा और उस के पास बहुत होगा पर जिस के पास नहीं है उस से वह भी जो उस के पास है ले लिया जाएगा। ३० और इस निकम्मे दास को बाहर के अंधेरे में डाल दो वहां रोना और दांत पीसना होगा॥

३१ जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्ग दूत उस के साथ तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा। ३२ और सब जातियां उस के सामने इकट्ठी

की जाएंगी और जैसा रखवाला भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है वैसा ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। ३३ और वह भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा। ३४ तब राजा अपनी दहिनी ओर-वालों से कहेगा हे मेरे पिता के धन्य लोगो आओ उस राज्य के अधिकारी हो जाओ जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। ३५ क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे खाने को दिया मैं पिआसा था और तुम ने मुझे पिलाया मैं परदेशी था और तुम ने मुझे अपने घर में उतारा। ३६ मैं नंगा था और तुम ने मुझे कपड़े पहिनाये बीमार था और तुम ने मेरी खबर ली मैं जेलखाने में था और तुम मेरे पास आए। ३७ तब धर्म्मी उस को उत्तर देंगे कि हे प्रभु हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया या पियासा देखा और पिलाया। ३८ हम ने कब तुझे पर-देशी देखा और अपने घर में उतारा या नंगा देखा और कपड़े पहिराए। ३९ हम ने कब तुझे बीमार या जेलखाने में देखा और तेरे पास आए। ४० तब राजा उन्हें उत्तर देगा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से एक के लिये किया वह मेरे लिये भी किया।। ४१ तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा हे स्रापित लोगो मेरे सामने से उस अनन्त आग में जा पड़ो जो शैतान और उस के दूतों के लिये तैयार की गई है। ४२

क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया मैं पियासा था और तुम ने मुझे नहीं पिलाया। ४३ मैं परदेशी था और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं उतारा मैं नंगा था और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिराए बीमार और जेलखाने में था और तुम ने मेरी खबर न ली। ४४ तब वे उत्तर देंगे कि हे प्रभु हम ने कब तुझे भूखा या पियासा या परदेशी या नंगा या बीमार या जेलखाने में देखा और तेरी सेवा टहल न की। ४५ तब वह उन्हें उत्तर देगा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से एक के लिये न किया वह मेरे लिये भी न किया। ४६ और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे पर धर्मी अनन्त जीवन में जा रहेंगे॥

२६. जब यीशु ये सब बातें कह चुका तो अपने चेलों से कहने लगा। २ तुम जानते हो कि दो दिन के पीछे फसह होगा और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने को पकड़वाया जाएगा। ३ तब महायाजक और प्रजा के पुरनिए काइफा नाम महायाजक के आंगन में इकट्ठे हुए। ४ और आपस में विचार किया कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें। ५ पर वे कहते थे कि पर्व्व के समय नहीं न हो कि लोगों में बलवा मचे॥

६ जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था। ७ तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमोल अतर

लेकर उस के पास आई और जब वह भोजन करने बैठा था तो उस के सिर पर ढाला। ८ यह देख कर उस के चेले रिसियाए और कहने लगे इस का क्यों सत्यानाश किया गया। ९ यह तो अच्छे दाम पर बिक कर कंगालों को बांटा जा सकता था। १० यह जान कर यीशु ने उन से कहा स्त्री को क्यों सताते हो उस ने मेरे साथ भलाई की है। ११ कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा। १२ उस ने मेरी देह पर यह अतर जो ढाला है वह मेरे गाड़े जाने के लिये किया है। १३ मैं तुम से सच कहता हूं कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा वहां उस के इस काम की चरचा भी उस के स्मरण में की जायगी॥

१४ तब यहूदाह इस्करियोती नाम बारहों में से एक ने महायाजकों के पास जाकर कहा। १५ यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं तो मुझे क्या दोगे उन्हों ने उसे तीस चांदी के सिक्के तौल कर दे दिये। १६ और यह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढने लगा॥

१७ अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहले दिन चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें। १८ उस ने कहा नगर में फुलाने के पास जाकर उस से कहो गुरु कहता है कि मेरा समय निकट है मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां

फसह करूंगा। १९ सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी और फसह तैयार किया। २० जब सांझ हुई तो वह बारहों के साथ भोजन करने बैठा। २१ जब वे खा रहे थे तो उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। २२ इस पर वे बहुत उदास हुए और हर एक उस से पूछने लगा हे गुरु क्या वह मैं हूं। २३ उस ने उत्तर दिया कि जिस ने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है वही मुझे पकड़वाएगा। २४ मनुष्य का पुत्र तो जैसा उस के विषय में लिखा है जाता ही है पर उस मनुष्य पर हाय जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है। यदि उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला होता। २५ तब उस के पकड़वानेवाले यहूदा ने कहा कि हे रब्बी क्या वह मैं हूं। २६ उस ने उस से कहा तू कह चुका। जब वे खा रहे थे तो यीशु ने रोटी ली और आशीस मांगकर तोड़ी और चेलों को देकर कहा लो खाओ यह मेरी देह है। २७ फिर उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया और उन्हें देकर कहा तुम सब इस में से पिओ। २८ क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। २९ मैं तुम से कहता हूं कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं॥

३० फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए ॥

३१ तब यीशु ने उन से कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं रखवाले को मारूंगा और झुण्ड की भेड़ें तित्तर बित्तर हो जाएंगी। ३२ पर मैं अपने जी उठने के पीछे तुम से पहिले गलील को जाऊंगा। ३३ इस पर पतरस ने उस से कहा यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं पर मैं कभी ठोकर न खाऊंगा। ३४ यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि इसी रात मुर्ग के बांग देने से पहिले तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा। ३५ पतरस ने उस से कहा चाहे मुझे तेरे साथ मरना भी हो तौभी मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा। ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा ॥

३६ तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमने नाम जगह में आकर उन से कहने लगा कि यहां बैठे रहो जब तक मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं। ३७ और वह पतरस और जबदी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया और उदास और बहुत व्याकुल होने लगा। ३८ तब उस ने उन से कहा मेरा जी बहुत उदास है यहां तक कि मैं मरने पर हूं। तुम यहां ठहरो और मेरे साथ जागते रहो। ३९ और वह थोड़ा आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा कि हे मेरे पिता यदि हो सके तो यह कटोरा मेरे पास से हट जाए तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा

नहीं पर जैसा तू चाहता है वैसा ही हो। ४० फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया और पतरस से कहा क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके। ४१ जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो आत्मा तो तैयार है पर शरीर दुर्बल है। ४२ फिर उस ने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की कि हे मेरे पिता यदि यह मेरे पिए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो। ४३ तब उस ने फिर आकर उन्हें सोते पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं। ४४ और उन्हें छोड़कर फिर चला गया और वही बात फिर कह कर तीसरी बार प्रार्थना की। ४५ तब उस ने चेलों के पास आकर उन से कहा अब सोते रहो और बिश्राम करते रहो देखो घड़ी आ पहुँची है और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। ४६ उठो चलें देखो मेरा पकड़वाने-वाला निकट आ पहुँचा है॥

४७ वह यह कह ही रहा था कि देखो यहूदा जो बारहों में से था आ गया और उस के साथ महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियां लिये हुए आई। ४८ उस के पकड़वानेवाले ने उन्हें यह बता दिया था कि जिस को मैं चूमूं वही है उसे पकड़ लेना। ४९ और तुरन्त यीशु के पास आकर कहा हे रब्बी सलाम और उस को बहुत चूमा। ५० यीशु ने उस से कहा

हे मित्र जिस काम को तू आया है वह कर ले। तब उन्हों ने पास आकर यीशु पर हाथ डाले और उसे पकड़ लिया। ५१ और देखो यीशु के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ा कर अपनी तलवार खींची और महायाजक के दास पर चलाकर उस का कान उड़ा दिया। ५२ तब यीशु ने उस से कहा अपनी तलवार काठी में कर क्योंकि जो तलवार चलाते हैं वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे। ५३ क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं और वह स्वर्ग दूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी हाजिर कर देगा। ५४ पर पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा होना आवश्यक है क्योंकर पूरी होंगी। ५५ उसी घड़ी यीशु ने भीड़ से कहा क्या तुम डाकू जानकर मेरे पकड़ने के लिये तलवारें और लाठियां लेकर निकले हो मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उपदेश दिया करता था और तुम ने मुझे न पकड़ा। ५६ पर यह सब इस लिये हुआ है कि नबियों के बचन पूरे हों। तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए॥

५७ और यीशु के पकड़नेवाले उसे काइफा महायाजक के पास ले गए जहां शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे। ५८ और पतरस दूर से उस के पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया और भीतर जाकर अन्त देखने को प्यादों के साथ बैठ गया। ५९ महायाजक और सारी महा सभा यीशु को मार डालने के लिये उस के बिरोध में झूठी गवाही

की खोज में थे। ६० पर बहुतेरे झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई। अन्त में दो जन आकर कहने लगे कि, ६१ इस ने कहा है कि मैं परमेश्वर का मन्दिर ढा सकता और उसे तीन दिन में बना सकता हूं। ६२ तब महायाजक ने खड़े होकर उस से कहा क्या तू कोई उत्तर नहीं देता ये लोग तेरे बिरोध में क्या गवाही देते हैं। ६३ पर यीशु चुप रहा। महायाजक ने उस से कहा मैं तुझे जीवते परमेश्वर की किरिया देता हूं कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है तो हम से कह दे। ६४ यीशु ने उससे कहा तू कह चुका बरन मैं तुम से यह भी कहता हूं कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों पर आते देखोगे। ६५ तब महायाजक ने अपने बस्त्र फाड़ के कहा इस ने परमेश्वर की निन्दा की अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन देखो तुम ने अभी यह निन्दा सुनी है। ६६ तुम क्या समझते हो उन्हां ने उत्तर दिया यह बध होने के योग्य है। ६७ तब उन्हों ने उस के मुंह पर थूका और उसे घूसे मारे औरां ने थप्पड़ मार के कहा, ६८ हे मसीह हम से नबूवत कर कि किस ने तुझे मारा॥

६९ और पतरस बाहर आंगन में बैठा हुआ था कि एक लौंडी ने उस के पास आकर कहा तू भी यीशु गलीली के साथ था। ७० वह सब के सामने मुकर गया और कहा मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है। ७१ जब वह बाहर

डेवढ़ी में चला गया तो दूसरी ने उसे देखकर उन से जो वहां थे कहा यह भी तो यीशु नासरी के साथ था । ७२ वह किरिया खाकर फिर मुकर गया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता । ७३ थोड़ी देर पीछे जो वहां खड़े थे उन्हों ने पतरस के पास आकर उस से कहा सचमुच तू भी उन में से एक है क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है । ७४ तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी । ७५ तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई कि मुर्ग के बांग देने से पहिले तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा और बाहर निकल के फूट फूट कर रोने लगा ॥

२७. जब भोर हुआ तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति किई । २ और उन्हों ने उसे बांधा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के हाथ सौंप दिया ॥

३ जब उस के पकड़वानेवाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया तो वह पछताकर वे तीस चांदी के सिक्के महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया । ४ और कहा मैं ने निर्दोषी को घात के लिये पकड़वाकर पाप किया है । उन्हों ने कहा हमें क्या तू ही जान । ५ तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंककर चला गया और जाकर अपने आप को फांसी दी । ६ महायाजकों ने वे

सिक्के लेकर कहा इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं क्योंकि यह लोहू का दाम है। ७ सो उन्हों ने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल लिया। ८ इस कारण वह खेत आज तक लोहू का खेत कहलाता है। ९ तब जो बचन यिरमयाह नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ कि उन्हों ने वे तीस सिक्के अर्थात् उस मुलाए हुए के मोल को जिसे इस्राईल के सन्तान में से कितनों ने मुलाया था ले लिए। १० और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के दाम में दिया॥

११ जब यीशु हाकिम के सामने खड़ा था तो हाकिम ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है यीशु ने उस से कहा तू आपही कह रहा है। १२ जब महायाजक और पुरनिए उस पर दोष लगा रहे थे तो उस ने कुछ उत्तर न दिया। १३ सो पीलातुस ने उस से कहा क्या तू सुनता नहीं कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियां दे रहे हैं। १४ पर उस ने उस को एक बात का भी उत्तर न दिया यहां तक कि हाकिम ने बहुत अचम्भा किया। १५ और हाकिम की यह रीति थी कि उस पर्व्व में लोगों के लिये किसी एक बंधुए को जिसे वे चाहते थे छोड़ देता था। १६ उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बंधुआ था। १७ सो जब वे इकट्ठे हुए तो

पीलातुस ने उन से कहा तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं बरअब्बा को या यीशु को जो मसीह कहलाता है। १८ क्योंकि वह जानता था कि उन्हों ने उसे डाह से पकड़वाया था। १९ जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा था तो उस की पत्नी ने उसे कहला भेजा कि तू उस धर्म्मी के मामले में हाथ न डालना क्योंकि मैं ने आज सपने में उस के कारण बहुत दुख भोगा है। २० महायाजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा कि वे बरअब्बा को मांग लें और यीशु को नाश कराएं। २१ हाकिम ने उन से पूछा कि इन दोनों में से किस को चाहते हो कि तुम्हारे लिये छोड़ दूं। उन्हों ने कहा बरअब्बा को। २२ पीलातुस ने उन से पूछा फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है क्या करूं। सब ने उस से कहा वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। २३ हाकिम ने कहा क्यों उस ने क्या बुराई की है पर वे और भी चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। २४ जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर इस के उलटे हुल्लड़ होता जाता है तो उस ने पानी लेकर भीड़ के सामने हाथ धोये और कहा मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं तुम ही जानो। २५ सब लोगों ने उत्तर दिया कि इस का लोहू हम पर और हमारे सन्तान पर हो। २६ इस पर उस ने बरअब्बा को उन के लिये छोड़ दिया

और यीशु को कोड़े लगवाकर सोंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए॥

२७ तब हाकिम के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सारी पलटन उस के आसपास इकट्ठी की। २८ और उस के कपड़े उतार कर उसे किरमिजी बागा पहिराया। २६ और कांटों का मुकुट गून्थकर उस के सिर पर रक्खा और उस के दहिने हाथ में सरकण्डा दिया और उस के आगे घुटने टेककर उस से ठट्ठे से कहा कि हे यहूदियों के राजा सलाम। ३० और उस पर थूका और वही सरकण्डा ले उस के सिर पर मारने लगे। ३१ जब वे उस का ठट्ठा कर चुके तो वह बागा उस से उतार कर फिर उसी के कपड़े उसे पहिराए और क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले॥

३२ बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नाम एक कुरैनी मनुष्य मिला उसे बेगार में पकड़ा कि उस का क्रूस उठा ले चले। ३३ और गुलगुता नाम की जगह जो खोपड़ी की जगह कहलाती है पहुँचकर, ३४ उन्हों ने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया पर उस ने चखकर पीना न चाहा। ३५ तब उन्हों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया और चिट्ठियां डालकर उस के कपड़े बांट लिए। ३६ और वहां बैठकर उस का पहरा देने लगे। ३७ और उस का दोष पत्र उस के सिर के ऊपर लगाया कि यह

यहूदियों का राजा यीशु है। ३८ तब उस के साथ दो डाकू एक दहिने और एक बाएं क्रूसों पर चढ़ाए गए। ३९ और आने जानेवाले सिर हिला हिलाकर उस की निन्दा करते, ४० और यह कहते थे कि हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले अपने आप को बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ। ४१ इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे, इस ने औरों को बचाया अपने को नहीं बचा सकता है। ४२ यह तो इस्राईल का राजा है। अब क्रूस पर से उतर आए और हम उस पर बिश्वास करेंगे। ४३ उस ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है। यदि वह इस को चाहता है तो अब इसे छुड़ा ले क्योंकि उस ने कहा था कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। ४४ इसी रीति डाकू भी जो उस के साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे उस की निन्दा करते थे॥

४५ दो पहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा। ४६ तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा एली एली लमा शबक्तनी अर्थात् हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया। ४७ जो वहां खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुन-कर कहा वह एलिय्याह को पुकारता है। ४८ उन में से एक तुरन्त दौड़ा और इस्पंज लेकर सिरके में डुबोया और सर-

कपड़े पर रखकर उसे चुसाया। ४९ औरों ने कहा रह जा देखें बचाने आता है कि नहीं। ५० तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ा। ५१ और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया और धरती डोली और चटानें फट गईं। ५२ और कबरें खुल गईं और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं। ५३ और उस के जी उठने के पीछे वे कबरों में से निकलकर पवित्र नगर में गये और बहुतों को दिखाई दिए। ५४ तब सूबेदार और जो उस के साथ यीशु का पहरा दे रहे थे भुईंडोल और जो कुछ हुआ था देखकर बहुत ही डर गए और कहा सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था। ५५ वहां बहुत सी स्त्रियां जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उस के साथ आई थीं दूर से देख रही थीं। ५६ उन में मरयम मगदलीनी और याकूब और योसेस की माता मरयम और जबदी के पुत्रों की माता थीं॥

५७ जब सांझ हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था आया। ५८ उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी। इस पर पीलातुस ने देने की आज्ञा दी। ५९ यूसुफ ने लोथ को लेकर उसे उजली चादर में लपेटा। ६० और उसे अपनी नई कबर में रक्खा जो उस ने चटान में खुदवाई थी और कबर के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़का के चला गया।

६१ और मरयम मगदलीनी और दूसरी मरयम वहां कबर के सामने बैठी थीं॥

६२ दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के पीछे का दिन था महायाजकों और फरीसियों ने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा, ६३ हे महाराज हमें स्मरण है कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था कि मैं तीन दिन के पीछे जी उठूंगा। ६४ सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कबर की रखवाली की जाए न हो कि उस के चेले आकर उसे चुरा ले जाएं और लोगों से कहने लगें कि वह मरे हुओं में से जी उठा। तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा। ६५ पीलातुस ने उन से कहा तुम्हारे पास पहरुए हैं जाओ अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। ६६ सो वे पहरुओं को साथ लेकर गए और पत्थर पर छाप देकर कबर की रखवाली की॥

२८. बिश्राम दिन के पीछे अठवारे के पहिले दिन पह फटते मरयम मगदलीनी और दूसरी मरयम कबर को देखने आई। २ और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और पास आकर पत्थर को लुढका दिया और उस पर बैठ गया। ३ उस का रूप बिजली सा और उस का बस्त्र पाले की नाईं उजला था। ४ उस के डर के मारे पहरुए कांप उठे और मरे हुए से हो गए। ५ स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा कि तुम

मत डरो मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूँढ़ती हो। ६ वह यहां नहीं पर अपने कहने के अनुसार जी उठा है आओ यह जगह देखो जहां प्रभु पड़ा था। ७ और शीघ्र जाकर उस के चेलों से कहो कि वह मरे हुओं में से जी उठा है और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है वहां उसे देखोगे देखो मैं ने तुम से कह दिया। ८ और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कबर से शीघ्र चली जाकर उस के चेलों को समाचार देने दौड़ गईं। ९ और देखो यीशु उन्हें मिला और कहा सलाम और उन्हों ने पास आकर और उस के पांव पकड़ कर उसे प्रणाम किया। ११ तब यीशु ने उन से कहा मत डरो मेरे भाइयों से जाकर कहो कि गलील को चले जाएं वहां मुझे देखेंगे॥

११ वे जा रही थीं कि देखो पहरुओं में से कितनों ने नगर में आकर सारा हाल महायाजकों से कह दिया। १२ तब उन्हों ने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की और सिपाहियों को बहुत चांदी देकर बोले, १३ कि यह कहना कि रात को जब हम सो रहे थे तो उस के चेले आकर उसे चुरा ले गये। १४ और यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुँचेगी तो हम उसे समझाएंगे और तुम्हें खटके से बचा लेंगे। १५ सो उन्हों ने वह चांदी लेकर जैसे सिखाए गए थे वैसा ही किया और यह बात आज तक यहूदियों में फैली हुई है।

१६ और एग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए जो यीशु ने उन्हें बताया था । १७ और उन्हों ने उसे देखकर प्रणाम किया पर किसी किसी को सन्देह हुआ । १८ यीशु ने उन के पास आकर कहा कि स्वर्ग और पृथिवी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है । १९ इस लिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला करो और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में बपतिसमा दो । २० और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है मानना सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त तक सब दिन तुम्हारे साथ हूं ॥

The Mission Press, Allahabad